सनातन संवर्धिनी

ॐ

तृतीय वर्ष - प्रथम अंक

जून - 2017

भारत रत्न महामना पं. मदनमोहन मालवीय जी
संस्थापक

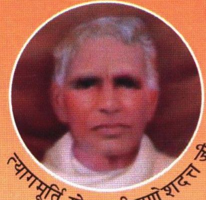
त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेशदत्त जी
संयोजक

महाशिवरात्रि पर्व के उपलक्ष्य में श्री कटास राज (पाकिस्तान) यात्रा-2017

स.ध. महावीर दल सेवा शिविर, कपाल मोचन, यमुनानगर (हरियाणा)

धर्मे ते धीयतां बुद्धिः
मनस्ते महदस्तु च

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब, (पंजी.) नई दिल्ली

(कार्यक्षेत्र: दिल्ली, चण्डीगढ़, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, जम्मू-कश्मीर, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, राजस्थान)
मुख्य कार्यालय: भूपेन्द्र भवन, कृष्णा मार्केट, पहाड़गंज, नई दिल्ली-55, दूरभाष: 011-23586251, 23584016
शाखा कार्यालय: गोस्वामी गणेशदत्त भवन, सैक्टर-19 ए, मध्य मार्ग, चण्डीगढ़, दूरभाष: 0172-2543283
सप्तऋषि आश्रम, हरिद्वार: 01334-261702

E-mail: sdprsabha@gmail.com

संपादक मण्डल

संरक्षक

डॉ. शिवकुमार शर्मा

संपादक मण्डल

डॉ. नन्द किशोर शर्मा

डॉ. भारती बन्धु

डॉ. विजय शर्मा

परामर्श मण्डल

श्री इन्द्र मोहन गोस्वामी

श्री उपेन्द्र शर्मा

श्री सरदारी लाल गोस्वामी

डॉ. देश बन्धु

डॉ. राज पाल विज

माता मंदिर ओखला, नई दिल्ली में स.ध. प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा प्रकाशित व्रतोत्सव प्रदर्शिका का विमोचन

संस्कार और संस्कृति

संस्कार और संस्कृति का अटूट सम्बन्ध है। संस्कार संस्कृति के अपरिहार्य अंग हैं। संस्कारों की समष्टि का नाम ही संस्कृति है। दोनों का अर्थ, निर्वचन तथा व्याकरणिक व्युत्पत्ति एक जैसी है। दोनों ही 'सम्' उपसर्ग पूर्वक कृञ् धातु से क्रमशः धञ् और क्तिन् प्रत्यय लगने पर निष्पन्न होते हैं। इन दोनों का चरम लक्ष्य भी एक ही है – विभिन्न धार्मिक एवं आध्यात्मिक उपचारों, उपायों अथवा विधियों द्वारा मानव के शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा के जन्म–जन्मांतरीय पापों, मलों एवं दोषों का क्षय या परिमार्जन करते हुए इन्हें शुद्ध एवं सात्त्विक भाव भूमि में प्रतिष्ठित करना। इस उच्च भावभूमि में पहुंच कर व्यक्ति दैवी सम्पदा से सम्पन्न हो जाता है जिसके फलस्वरूप संकीर्ण और स्वार्थ–परायण मनोवृत्तियों से ऊपर उठकर उसका समस्त जीवन धर्म, संस्कृति, समाज और मानवता को समर्पित हो जाता है। इस प्रकार संस्कार और संस्कृति एक–दूसरे के पूरक भी हैं और एक दूसरे पर आश्रित भी हैं। संस्कार संस्कृति की भूमि पर ही आधारित होता है। दूसरी ओर संस्कारों के समूह से ही संस्कृति का निर्माण होता है। संस्कार ही संस्कृति के जन्म, विकास, उत्थान और उत्कर्ष के कारण और साधन बनते हैं।

सनातन धर्म एवं संस्कृति में संस्कारों का सर्वाधिक महत्त्व है। वस्तुतः यज्ञ, तप, जप, दान, भक्ति, सत्संगति आदि सत्कर्मों एवं सत्क्रियाओं की चरम परिणति मन–बुद्धि और आत्मा को परिष्कृत और सुसंस्कृत करने में है जैसा की आचार्य प्रवर श्री राम शर्मा जी का कथन है – "किसी व्यक्ति को सुसंस्कृत बनाने के लिए शिक्षा, सत्संग, वातावरण, सूझ–बूझ आदि अनेक बातों की आवश्यकता होती है। सामान्यतः ऐसे ही माध्यमों से लोगों की मनोभूमि विकसित होती है। इसके अतिरिक्त भारतीय तत्त्ववेत्ताओं ने मनुष्य की अन्तः भूमि को श्रेष्ठता की दिशा में विकसित करने के लिए कुछ ऐसे सूक्ष्म उपचारों का भी आविष्कार किया है जिनका प्रभाव शरीर तथा मन पर ही नहीं, सूक्ष्म अन्तःकरण पर भी पड़ता है और उसके प्रभाव से मनुष्य को गुण, कर्म, स्वभाव की दृष्टि से समुन्नत स्तर की ओर उठने में सहायता मिलती है। इस आध्यात्मिक उपचार का नाम संस्कार है।" (कर्मकाण्ड भास्कर पृ.–127) इन संस्कारों की प्रामाणिक संख्या 16 मानी गई है। इन संस्कारों के कारण ही सम्पूर्ण विश्व में भारतीय संस्कृति का वर्चस्व है। वस्तुतः भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठता और महानता का श्रेय हमारी संस्कार–पद्धति को जाता है।

'सम्' उपसर्ग पूर्वक कृञ् धातु से धञ् प्रत्यय लगने पर (सम्+कृञ्+धञ्) संस्कार शब्द निष्पन्न होता है जिसका सामान्य अर्थ है – शुद्धीकरण–प्रक्रियाओं द्वारा किसी वस्तु/तत्त्व/पदार्थ को दोष रहित करते हुए उसमें गुणों का आधान करना और इस प्रकार उसे श्रेष्ठ तथा उत्तम बना देना ही उसका संस्कार है। धर्म शास्त्र के साथ–साथ संस्कार शब्द का अन्य अनेक शास्त्रों में भी प्रयोग हुआ है। आयुर्वेद में शुद्ध रसायन बनाने के लिए औषधियों में अनेक संस्कार डाले जाते हैं। विशेष कालावधि के लिए उन्हें कई रसों में डुबोया जाता है, खरल किया जाता है और फिर विशेष–विधि से अग्नि में तपाया जाता है, तब कहीं शुद्ध संस्कार वाला रसायन तैयार होता है। इसी प्रकार पृथ्वी और समुद्र से निकलने वाले खनिजों जैसे – सोना, हीरा, तांबा, लोहा, कच्चा तेल आदि को

तपाने–तराशने और अन्य प्रकार की विविध प्रक्रियाओं से गुजार कर और उनके मलों, दोषों और खोटों को दूर कर उन्हें शुद्ध बनाया जाता है। इसी प्रकार धर्म शास्त्र में समय–समय पर आवश्यकता के अनुसार विधिपूर्वक विशेष प्रकार के धार्मिक क्रियाओं – प्रक्रियाओं द्वारा गर्भस्थ शिशु से लेकर मत्युपर्यन्त जीव के जन्म जन्मांतरीय मलों एवं पापों का परिशोधन संस्कार कहलाता है।

आश्चर्य है कि सनातन धर्म के आधारभूत इस संस्कार शब्द का प्राचीन वैदिक साहित्य में प्रत्यक्ष प्रयोग नहीं मिलता, पर यहाँ संस्कार के स्थान पर इसी अर्थ में संस्कृत और संस्करोति शब्दों का अनेक बार प्रयोग हुआ है। ऋग्वेद में संस्कृत का प्रयोग विशेषण (पवित्रता के अर्थ में) के रूप में हुआ है – अश्विनी कुमार पवित्र (संस्कृत) बर्तन को कभी हानि नहीं पहुंचाते (5/76/2)। शतपथ ब्राह्मण एवं छान्दोग्योपनिषद् में भी संस्कृत और संस्करोति शब्दों का प्रयोग संस्कार अर्थ में हुआ है। परन्तु प्रत्यक्ष रूप में प्रथम बार संस्कार शब्द का प्रयोग महर्षि जैमिनि के मीमांसा सूत्र में उपलब्ध होता है। वहाँ इसका प्रयोग भास्वर करने अथवा चमकाने के अर्थ में हुआ है। मीमांसा दर्शन पर भाष्य लिखने वाले शबर मुनि ने संस्कार को इस प्रकार परिभाषित किया है – "संस्कारो नाम स भवति यस्मिञ्जाते पदार्थो भवति योग्यः कस्यचिदर्थस्य", अर्थात् संस्कार वह है जिसके होने से कोई पदार्थ या व्यक्ति किसी कार्य के लिए योग्य हो जाता है। मीमांसक कुमारिल भट्ट की तन्त्रवार्तिक के अनुसार – "योग्यतां चादधानाः क्रियाः संस्कारा इत्युच्यन्ते," अर्थात् संस्कार वे क्रियाएँ तथा रीतियाँ हैं जो योग्यता प्रदान करती हैं। यह योग्यता दो प्रकार की होती है – पाप–मोचन से उत्पन्न योग्यता तथा नवीन गुणों के आधान से उत्पन्न योग्यता। संस्कारों से नवीन गुणों की प्राप्ति तथा तप से पापों या दोषों का मार्जन होता है। वीरमित्रोदय ने भी संस्कार की ऐसी ही परिभाषा दी है – संस्कार एक विलक्षण योग्यता है जो शास्त्रविहित क्रियाओं के करने से उत्पन्न होती है। यह योग्यता दो प्रकार से आती है – प्रथम योग्यता के अनुसार व्यक्ति जन्म–जन्मांतरीय दोषों से मुक्त होता है जैसे गर्भाधान एवं पुंसवन आदि संस्कारों से पिता के वीर्य एवं माता के रज के साथ गर्भाशय के दोषों का मोचन होता है। द्वितीय योग्यता से व्यक्ति अन्य क्रियाओं को करने में समर्थ एवं योग्य हो जाता है। जैसे उपनयन संस्कार से वेदाध्ययन तथा विवाह संस्कार से संतति जनन की योग्यता प्राप्त हो जाती है।

संस्कारों की संख्या के सम्बंध में ऋषिगण एक मत नहीं हैं। महर्षि गौतम ने चालीस संस्कारों और आत्मा के आठ शील गुणों का वर्णन किया है। वैखानस ने अठारह संस्कार स्वीकार किये हैं जबकि अंगिरा ने पच्चीस संस्कार स्वीकारे हैं। महर्षि व्यास ने सोलह प्रामाणिक संस्कार गिनाए हैं और अधिकांश ऋषियों ने उन्हीं के मत का अनुगमन किया है। व्यास द्वारा निर्दिष्ट सोलह संस्कार निम्न हैं –

गर्भाधानं पुंसवनं सीमन्तो जातकर्म च। नामक्रियानिष्क्रमणेऽन्नाशनं वपनक्रिया।।
कर्णवेधो व्रतादेशो वेदारम्भक्रियाविधिः। केशान्त स्नानमुद्वाहो विवाहाग्निपरिग्रहः।।
त्रेताग्निसंग्रहश्चेति संस्काराः षोडश स्मृताः।। (व्यास स्मृति 1/13–15)

अर्थात् 1. गर्भाधान, 2. पुंसवन, 3. सीमंतोन्नयन, 4. जातकर्म, 5. नामकरण, 6. निष्क्रमण, 7. अन्नप्राशन,

8 वपनक्रिया (चूड़ाकरण), 9. कर्णवेध, 10. व्रतादेश (उपनयन) 11. वेदारंभ, 12. केशांत, 13. वेदस्नान (समावर्तन), 14. विवाह, 15. विवाहाग्निपरिग्रह और 16. .त्रेताग्नि संग्रह।

इस लेख में स्थान सीमित होने के कारण केवल गर्भाधान संस्कार पर ही प्रकाश डाला जायेगा। अग्रिम अंकों मेंसमय–समय पर शेष संस्कारों का उल्लेख किया जायेगा।

गर्भाधान – गर्भाधान संस्कार सोलह संस्कारों में सर्वप्रथम एवं सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण संस्कार है। एक ओर यह संस्कार नव विवाहित दम्पति के विवाहित जीवन को सम्पूर्णता प्रदान करने का उपक्रम है तो दूसरी ओर उस दम्पति की जायमान संतति के प्रजनन की संस्कारित पृष्ठ भूमि तैयार करता है। सामान्य रूप में गर्भाधान का अर्थ है – गर्भ का आधान अर्थात् गर्भ को स्थापित करना। जिस कर्म–प्रक्रिया (सम्भोग) द्वारा पति अपनी पत्नी में अपना बीज (वीर्य) स्थापित करता है उसे गर्भाधान कहते हैं – गर्भः संधार्यते येन कर्मणा तद् गर्भाधानमिति। शौनक ऋषि ने इस संस्कार में स्त्री को अधिक महत्व दिया है और कहा है कि इस संस्कार में पत्नी पति द्वारा प्रदत्त शुक्र को धारण करती है। स्पष्ट है कि ऋषि शौनक ने नारी की उर्वरता को इस संस्कार के सम्पादन में सर्वाधिक महत्व दिया है।

स्थूल रूप में प्रतीत होता है कि गर्भाधान पुरुष और स्त्री के सहवास से जन्य है। पर असंयत और अमर्यादित सम्भोग संस्कारित गर्भाधान नहीं कर सकता। संस्कारित गर्भाधान के लिए पति–पत्नी को संयम पूर्वक कुछ शास्त्रीय विधि–विधानों की परिपालना करनी होती है। विधिपूर्वक संस्कार से युक्त गर्भाधान से स्वस्थ और सुयोग्य संतति जन्म लेती है। वस्तुतः यह संस्कार पुरुष के वीर्य सम्बन्धी तथा स्त्री के रज सम्बन्धी दोषों का मार्जन करते हुए क्षेत्र (गर्भाशय) को संस्कारित एवं पवित्र करता है। इन तीनों की पवित्रता एवं निर्मलता ही इस संस्कार का फल है।

निषेकाद् बैजिकं चैनो गार्भिकं चापमृज्यते। क्षेत्रसंस्कार सिद्धिश्च गर्भाधानफलं स्मृतम्।।

वस्तुतः गर्भाधान के समय पति और पत्नी जिस प्रकार के आहार–व्यवहार, विचार–चेष्टा से भावित होकर परस्पर समागम करते हैं उनकी संतति पर इन सबका स्पष्ट प्रभाव पड़ता है जैसा कि 'सुश्रुत संहिता' में लिखा है –

आहाराचारचेष्टाभिर्यादृशीभिः समन्वितौ। स्त्रीपुंसौ समुपेयातां तयोः पुत्रोऽपि तादृशः।।

अतः शुभ एवं सात्त्विक आहार एवं आचार–विचार से समन्वित दम्पति को गर्भाधान में प्रवृत्त होना चाहिए।

गर्भाधान गर्भ (भ्रूण स्थित शिशु) का संस्कार है या क्षेत्र अर्थात् स्त्रीकुक्षि का ? इस सम्बन्ध में प्रमुख दो मत हैं – एक मत के अनुसार विवाह के चतुर्थी कर्म के उपरान्त प्रथम सम्भोग के समय ही गर्भाधान संस्कार किया जाना चाहिए। इस दृष्टि से यह संस्कार स्त्री–क्षेत्र से सम्बद्ध है। दूसरे मत में जब तक गर्भधारण न हो जाए तब तक प्रत्येक मासिक धर्म के उपरान्त चौथे दिन रजस्वला के शुद्ध स्नात होने पर यह संस्कार किया जाना चाहिए। इस कृत्य को ऋतु–संगमन भी कहा गया है। वस्तुतः इस संस्कार का उद्देश्य स्वस्थ, सुयोग्य एवं संस्कारी संतान प्राप्त करना है। भारतीय संस्कृति में विवाह एवं सम्भोग का उद्देश्य मात्र दैहिक आनन्द–प्राप्ति न होकर पितृऋण से मुक्त होने के लिए एवं पुम् नामक नरक से बचने के लिए पुत्र–संतति उत्पन्न करना है। इस निमित्त कुछ स्थलों पर दस पुत्रों को पैदा करने की बात भी कही गई है। पर आधुनिक युग स्त्री–पुरुष एवं पुत्र–पुत्री की समानता का युग है। आज दम्पति अपनी सुविधा के अनुसार एक–दो संतान ही चाहते हैं–चाहे पुत्र हो या पुत्री। वे विवाह के तुरन्त बाद संतान पैदा करने के इच्छुक भी नहीं है। फलतः उन्हें इस संस्कार को विवाह के चतुर्थी कर्म के उपरान्त एक बार सम्पन्न कर लेने पर भविष्य में उस समय सम्पादित करना चाहिए जब वे संतान उत्पन्न करना चाहते हों। पर संस्कार अवश्य सम्पन्न करना चाहिए। इससे संस्कारवान् संतति का जन्म होगा जिससे भावी युग और समाज तथा विश्व संस्कारवान् बनेंगे।

डॉ नन्दकिशोर शर्मा, प्रधान संपादक

आदि काल से भारतीय नवसंवत्सर का विशेष महत्व

हमारी धड़कनें और जीवन नव संवत्सर के हिसाब से हैं। यह विशुद्ध रूप से हमारी परंपराओं से जुड़ा कलैण्डर है जिसमें वैज्ञानिकता है। सही मायने में यह सृष्टि का आरंभ माना जाता है। मुझे याद है कि छात्र जीवन में हम हर प्रकार की काल गणना में संवत्सर का संदर्भ देते थे। हिंदी साहित्य का इतिहास नामक पुस्तक में आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने कहीं भी ईस्वी सन् का उल्लेख नहीं किया है। उन्हें जहां भी तिथि और वर्ष के संदर्भ की आवश्यकता पड़ी वहां भारतीय संवत्सर का ही उल्लेख किया है। ईस्वी संवत् ईसा के जन्म वर्ष के हिसाब से प्रचलित है, जिसे अब धीरे–धीरे यहां भी अपना लिया गया है। लेकिन आज भी हमारे सब तीज–त्योहार हमारे भारतीय पंचांग के हिसाब से ही मनाए जाते हैं। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नववर्ष शुरू होता है और साल भर के सभी त्योहार की तिथियों का निश्चय इसी के अनुरूप होता है। दरअसल इस्लाम ने चंद्रमा आधारित कलैण्डर अपनाया और अंग्रेजों ने सूर्य आधारित। जबकि हमारे कलैण्डर की वैज्ञानिकता में दोनों का ही समावेश है। यह चिंता की बात है कि हम भारतीय पद्धति के पंचाग पर आधारित तिथि व माह को भूलते जा रहे हैं। हमें इनकी जानकारी जरूरी है।

आज नई पीढ़ी को चैत्र, वैशाख आदि महीनों का नाम और क्रम शायद याद भी न हों। लेकिन वैज्ञानिकता इन्हीं की है। जब विशाखा नक्षत्र होता है तो वैशाख, चित्रा नक्षत्र होता है तो चैत्र और इसी क्रम में हर माह के नाम और तिथियों के नाम हैं। ऐतिहासिक तथ्यों में जाएं तो उज्जैन के नरेश विक्रमादित्य ने पूरे भारत का शासन संभाला, उस दिन से वर्ष की गणना शुरू हुई। तब से ही इसे विक्रम संवत् कहा जाने लगा। यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि काल गणना का वर्ष अलग होता है और पंचाग अलग। चैत्र से लेकर फाल्गुन तक का पंचाग और भी पहले से इसीलिए चला आ रहा है क्योंकि माना जाता है कि चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को ब्रह्मा ने सृष्टि का प्रारंभ किया। इसी कारण विक्रम संवत् की शुरूआत भी चैत्र के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से होती है। अन्य संवत्सर भी इसी दिन से प्रारंभ होते हैं जैसे कलयुग को शुरू हुए 5118 वर्ष पूरे हो गए और यह 5119 वर्ष लग रहा है।

महाराष्ट्र में भी नए साल को गुड़ी पड़वा के रूप में मनाया जाता है। दक्षिण भारत में भी इसे युगादि के नाम से पुकारा जाता रहा है जो अब अपभ्रंश होकर उगादि हो गया। इस प्रकार वर्ष गणना अलग–अलग भले ही हों लेकिन पंचांग चैत्र से ही प्रारंभ होता है। छह ऋतुओं में से नववर्ष बसंत से शुरू होता था। अब चाहे 10–15 वर्ष का अंतर आ गया हो। देश के विभिन्न संवत्सर चल रहे हैं। शालिवाहन वर्ष भी चलता आ रहा है जिसे 1938 वर्ष पूरे हो गए हैं और 1939वां वर्ष शुरू हो गया है। उल्लेखनीय है कि भारत सरकार ने 1957 में एक आदेश द्वारा इसी शक संवत्सर को अधिकृत मानते हुए इसका सारे पत्राचार में प्रयोग शुरू किया था। प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने मेघनाद साहा सहित वैज्ञानिकों की एक समिति बनाई थी जिसमें तीन चार प्रकार के वर्षारंभ के समन्वय से यह

कलैण्डर बनाया था। हमारे यहां वित्त वर्ष अप्रैल से मार्च तक चलता है। शैक्षणिक वर्ष जुलाई से मई तक चलता है। अंग्रेजी वर्ष जनवरी से दिसंबर तक और भारतीय वर्ष चैत्र से फाल्गुन तक चलते हैं। इन सबको समन्वित करते हुए एक अधिकृत भारतीय शकाब्द पूरे देश में चले, यह समिति की सिफारिश थी। इसी आशय की आज्ञा केंद्र सरकार ने मार्च 1957 में निकाली थी। इस शकाब्द में कृष्ण और शुक्ल पखवाड़े नहीं होते और इसमें 30 और 31 तिथियां ही होती हैं। इस आदेश की पालना कुछ वर्षों तक तो होती रही। आजकल केवल आकाशवाणी और दूरदर्शन से ही इस शकाब्द की शुरूआत की घोषणा होती है। अन्यथा यह पूरी बातें विलुप्त हो चुकी हैं। आज विक्रम वर्ष प्रारंभ हो रहा है व अनेक सदियों से इतिहास का आधार रहा है। भारत का इतिहास ही नहीं, हिंदी साहित्य और संस्कृत साहित्य तथा भारतीय संस्कृति का इतिहास भी विक्रम संवत् की तिथियां ही उल्लेखित करते रहे हैं। अंग्रेजों के आने से पहले जिन महापुरूषों की जयंतियां आती थी, वे सब आज भी इसी पंचाग के अनुसार मनाई जाती है। नानक जयंती कार्तिक पूर्णिमा, प्रताप जयंती ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया को महावीर जयंती चैत्र शुक्ल और गुरूगोविंद सिंह जयंती पौष शुक्ल सप्तमी को मनाई जाती है। अंग्रेजी कलैण्डर से ये मनाई ही नहीं जा सकतीं। यही कारण है कि अंग्रेजियत जितनी भी हावी हो जाए लेकिन भारत में भारतीय कलैण्डर ही प्रासंगिक होगा। जनवरी–दिसंबर वाला ईसाई कलैण्डर 365 दिन वाला होता है और यह सूर्य पर आधारित है। इस्लामी कलैण्डर 354 दिन का है और चंद्र आधारित है।

चैत्र से फाल्गुन वाला भारतीय पंचांग सूर्य, चंद्र और नक्षत्रों का समन्वय करके चलता है। अमावस्या को चांद नहीं दिखेगा, हर पूर्णिमा को पूरा दिखाई देगा, हर पूर्णिमा को विशिष्ट नक्षत्र होगा जिसके नाम से वह मास जाना जाता है। इस प्रकार सूर्य, चंद्र और नक्षत्रों के समन्वय से हर तीसरे वर्ष अधिक मास भी जोड़ा जाता है। दूसरे शब्दों में यह पंचांग समूचे ब्रहमांड के समन्वय से चलता है।

बासन्ती नवरात्र के ये नौ दिन काल परिवर्तन के होते हैं। ये नौ दिन, काल व ऋतु परिवर्तन के होते हैं। प्रकृति में इन दिनों भारी वायुमण्डलीय परिवर्तन क्रमिक रूप से होते हैं और उनसे हमारा मन, मस्तिष्क और शरीर स्वस्थ रहे, इसके लिए सभी लोग सात्विक आहार–विहार अपनाते हैं और धार्मिक नियमों की पालना करते हैं। शरीर की बाहरी शुद्धि के लिए शुद्धता, पवित्रता से रहना, पवित्र वातावरण में पवित्र वस्तुओं से ही संपर्क रखा जाता है और आंतरिक शुद्धता के लिए दैवी शक्तियों के साथ साथ अपने इष्ट
की उपासना व साधना परम शक्तिशाली हो जाती है।

सुरेन्द्र कुमार जोशी
सेवा–निवृत्त आर.ई.एस.
सूरतगढ़
ज़िला – श्री गंगानगर (राजस्थान)

विकृत होते विवाह सम्बन्ध और सनातन धर्म

भौतिकता की चकाचौंध और पाश्चात्य संस्कृति के अन्धानुकरण के फलस्वरुप आज समाज में अनेक धार्मिक, सांस्कृतिक, पारिवारिक और सामाजिक विकृतियाँ पनप रही हैं जिसके कारण भारतीय सभ्यता और संस्कृति का स्वरूप और अस्तित्व विखण्डित हो रहा है। ऐसे में धर्म और समाज के कर्णधारों तथा बुद्धिजीवियों के समक्ष यह चुनौती है कि अपने शास्त्रों, वैदिक वाङ्मय और प्राचीन साहित्य का आलोचन करके यह चिन्तन करें कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य के परिष्करण में सनातन धर्म की क्या भूमिका हो सकती है। सनातन धर्म के शाश्वत मूल्यों को आधुनिक जनमानस के सामने प्रकाशित करना सभी प्रबुद्ध मनीषियों का दायित्व है। इसी प्रसङ्ग में 'विकृत होते विवाह सम्बन्ध और सनातन धर्म' विषय पर किञ्चित् विचार करने का प्रयास प्रस्तुत आलेख में किया जा रहा है।

सर्वप्रथम यह विचारणीय है कि सनातन धर्म क्या है। सनातन पद का अर्थ है – नित्य, अनादि, स्थायी, प्राचीन और धर्म पद का अर्थ है – कर्त्तव्य, न्याय, कानून तथा वह कर्म जिसके करने से करने वाले का इस लोक में अभ्युदय हो और परलोक में मोक्ष की प्राप्ति हो। धर्म एवं नीति सम्बन्धी विश्वकोश के अनुसार धर्म शब्द का अर्थ 'पवित्र नियम अथवा कर्त्तव्य' है। 'ध्रियते लोकोऽनेन, धरति लोकं वा' इस व्युत्पत्ति से 'धर्म' शब्द धारणार्थक 'धृ' धातु से मन् प्रत्यय के योग से निष्पन्न होता है जिसका अर्थ है – 'धारण करने वाला' अर्थात् लोकों को धारण करने वाला कर्त्तव्य–कर्म। महाभारत में धर्म को स्पष्ट रूप से प्रजा को धारण करने वाला कहा गया है –

धारणाद्धर्म इत्याहु धर्मो धारयते प्रजाः।
यत्स्याद् धारणसंयुक्तं स धर्म इति निश्चयः।।

अतएव धर्म उन शाश्वत सिद्धान्तों का समुदाय है, जिनके द्वारा मानव समाज सत्पथ पर प्रवृत्त होकर अभ्युदयपूर्वक अपने अस्तित्व को धारण करता है।

धर्मसम्बन्धी सनातन धारणा अत्यन्त व्यापक है और वह मानव के सम्पूर्ण जीवन को स्पर्श करती है। तदनुसार सनातन धर्म किसी मत, पन्थ या सम्प्रदाय का द्योतक नहीं है, अपितु यह तो एक जीवन शैली या आचारसंहिता है, जो मानवजाति के अभ्युदय के लिए समाज के कृत्यों को व्यवस्थापित करती है। सनातन धर्म की परिधि में शिशु के जन्म से लेकर उसकी युवावस्था और वृद्धावस्था तक की सभी परिस्थितियों में कर्त्तव्याकर्त्तव्य का समावेश हो जाता है। भारतीय जीवन के विविध पक्षों में षोड़श संस्कार, आश्रम–वर्णव्यवस्था, रहन–सहन, औद्योगिक प्रवृत्तियाँ, राजनीतिक जीवन और शिल्प आदि प्रमुख हैं। इन सभी के स्वरूप एवं औचित्य का वर्णन धर्मशास्त्रों में स्पष्ट रूप से किया गया है। भारतीय धर्म की इस व्यापकता का आभास विदेशी लेखकों की रचनाओं में भी मिलता है।

सनातन धर्म की परम्परा में गृहस्थाश्रम का महत्त्व सुविदित है। धर्मशास्त्रकारों में अधिकांश ने गृहस्थाश्रम को प्रभूत गौरव प्रदान किया है। आपस्तम्बधर्म सूत्र के अनुसार आश्रम चार हैं – गार्हस्थ्य, गुरुगेह, मुनि रूप में रहना तथा वानप्रस्थ। यहाँ गार्हस्थ्य को सर्वप्रथम स्थान इसकी प्रभूत महत्ता के कारण ही दिया गया है। गृहस्थ नामक जीवन–भाग का उल्लेख ऋग्वेद में भी प्राप्त होता है।

उक्त चारों आश्रमों में से एक ही आश्रम को वास्तविक माना जाता है और वह है गृहस्थाश्रम। ब्रह्मचर्य तो केवल तैयारी मात्र है। अन्य आश्रम इससे कम महत्वपूर्ण है। मनु ने गृहस्थाश्रम की श्रेष्ठता इन शब्दों में बताई है –

यस्मात् त्रयोऽप्याश्रमिणो ज्ञानेनान्नेन चान्वहम्।

गृहस्थेनैव धार्यन्ते तस्माज्ज्येष्ठाश्रमो गृही।।

मनु के मत का समर्थन करते हुए वसिष्ठ ने लिखा है कि जिस प्रकार सभी नदियाँ समुद्र में जाकर आश्रय पाती हैं, उसी प्रकार सभी आश्रमों के लोग गृहस्थ के घर पहुँचकर आश्रय पाते हैं। जिस प्रकार माता का आश्रय लेकर सभी जन्तु जीते हैं, वैसे ही सभी भिक्षुक गृहस्थ का आश्रय लेकर जीते हैं।

उक्त धर्मशास्त्रीय मान्यताओं से गृहस्थाश्रम की सर्वोत्कृष्टता सिद्ध होती है। कालिदास ने भी गृहस्थ को अन्य आश्रमों से श्रेष्ठ माना है, क्योंकि अन्य सभी आश्रम गृहस्थ पर ही आश्रित होते हैं। यह आश्रम सबका उपकार करने में समर्थ है – सर्वोपकारक्षम आश्रमोऽयम्।

इस गृहस्थाश्रम में पदार्पण के लिए सनातन धर्म में एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण संस्कार की व्यवस्था है, और वह है विवाह संस्कार। सभी धर्मशास्त्रकारों ने मानवजीवन के लिए विहित नाना संस्कारों में विवाह को अन्यतम माना है। धर्मशास्त्रकारों ने ऋग्वेद में प्राप्त संकेतों के आधार पर विवाह के मुख्यतया दो उद्देश्य बताए हैं – गृहस्थ होकर देवों के लिए यज्ञ करना तथा सन्तानोत्पत्ति द्वारा पितृऋण से मुक्त होकर प्रजातन्तु को अविच्छिन्न रखना। पत्नी से संयुक्त होकर ही पुरुष यज्ञादि धार्मिक कृत्य करने का अधिकारी होता है। सन्तोनोत्पति करना विवाह का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है। अविवाहित और सन्तानहीन पुरुष अपूर्ण होता है। ऐतरेय ब्राह्मण का कथन है कि स्त्री को 'जाया' कहा गया है, क्योंकि पति ने पत्नी के गर्भ से पुत्र के रूप में ही जन्म लिया। शतपथ ब्राह्मण में दाम्पत्य का आदर्श उद्देश्य प्रस्तुत है। तदनुसार पत्नी पति का आधा अंश है। अतः जब तक व्यक्ति विवाह नहीं करता, जब तक सन्तोत्पत्ति नहीं करता, तब तक वह पूर्ण नहीं है।

ब्राह्मणग्रन्थों के उक्त वचनों से यह स्पष्ट है कि विवाह के उद्देश्य पुरुष को पूर्णता प्रदान करके उसे यज्ञीय कृत्यों की पात्रता प्रदान करना था। आपस्तम्ब धर्मसूत्र में ऐसा निर्देश है कि प्रथम पत्नी के गर्भवती होने के कारण पुरुष को दूसरी पत्नी को ग्रहण नहीं करना चाहिए और धार्मिक कृत्य भी नहीं करने चाहिए। इस निषेधात्मक निर्देश का यही तात्पर्य है कि विवाह के प्रमुखतः दो उद्देश्य हैं – पुरुष को धार्मिक कृत्यों के योग्य बनाना और सन्तानोत्पत्ति करना। मनु के अनुसार भी धर्मसम्पत्ति, प्रजा एवं रति – ये तीन विवाहसम्बन्धी प्रमुख उद्देश्य हैं। शास्त्रोक्त परम्परा के अनुसार अविवाहित व्यक्ति किसी भी प्रकार के यज्ञ–सम्पादन, हवन आदि कार्यों के लिए अधिकारी नहीं होता। पत्नी पति की सहधर्मिणी होती है और उसी के संग से व्यक्ति धार्मिक कृत्यों का अनुष्ठान सम्पन्न कर सकता है। अपत्नीक व्यक्ति यज्ञ के अधिकार से वंचित होता है। आपस्तम्ब धर्म सूत्र के अनुसार विवाहोपरान्त पति–पत्नी धार्मिक कृत्य साथ करते हैं, पुण्यफल में समान भाग पाते हैं, धनसम्पत्ति में समान भाग रखते हैं। इसीलिए सीता के अभाव में राम को यज्ञ करते समय सीता की स्वर्णिम मूर्ति पास में रखनी पड़ी थी। पाणिनि ने पत्नी शब्द की व्युत्पत्ति करके बताया है कि उसी को पत्नी कहा जाता है, जो यज्ञ करने और यज्ञफल की भागी होती है।

सपत्नीक यज्ञ करके पुरुष नानाविध अभ्युदय की प्राप्ति करता है। गृहस्थ होकर ही वह पंच महायज्ञ सम्पन्न

करता है। नाना प्रकार के यज्ञों का सम्पादन करने पर व्यक्ति देवऋण से उऋण हो जाता है। व्यक्ति तीन ऋणों के साथ जन्म लेता है – ऋषिऋण, देवऋण एवं पितृऋण। इन तीन ऋणों में से वह ब्रह्मचर्य (वेदाध्ययन) द्वारा ऋषिऋण से, यज्ञ करके देवऋण से तथा सन्तानोत्पत्ति करके पितृऋण से मुक्त होता है। मनु का कथन है कि तीनों ऋणों से मुक्त हुए बिना किसी को मोक्ष की अभिलाषा नहीं करनी चाहिए।

ज्येष्ठ पुत्र को जन्म देने से ही व्यक्ति को पितृऋण से मुक्ति मिल जाती है। मनु का कथन है कि पुत्रजन्म से पिता स्वर्ग आदि उत्तम लोकों को प्राप्त करता है, पौत्रजन्म से उन लोगों में अनन्तकाल तक निवास करता है तथा प्रपौत्र के जन्म से सूर्य लोक को प्राप्त करता है। पुत्र को इसीलिए पुत्र कहा जाता है क्योंकि वह अपने पिता की 'पुम्' नामक नरक से रक्षा करता है –

पुंनाम्नो नरकाद्यस्मात्त्रायते पितरं सुतः। तस्मात्पुत्र इति प्रोक्तः स्वयमेव स्वयंभुवा।।

निरुक्तकार ने भी 'पुत्र' शब्द की व्युत्पत्ति इसी अर्थ में की है। सनातनधर्म के अनुसार भारतीय संस्कृति में विवाह का परम उद्देश्य सन्तानोत्पत्ति द्वारा पितृऋण से मुक्ति और प्रजातन्तु को अविच्छिन्न बनाए रखना है। विवाह का उद्देश्य क्षणिक दैहिक सुख कदापि नहीं है।

विवाह का यह उदात्त स्वरूप और महान् उद्देश्य वर्तमान समय में अत्यन्त विकृत होता जा रहा है। आज के युवा दाम्पत्य–सम्बन्ध की गरिमा को धूमिल कर रहे हैं। नित्यप्रति के समाज में पति द्वारा पत्नी की प्रताड़ना तथा पत्नी द्वारा पति के साथ बेवफाई या निष्ठाहीनता की घटनाएं घटित हो रही हैं। पति और पत्नी दोनों में पारस्परिक सहिष्णुता का अभाव परिलक्षित हो रहा है। इसी कारण असहिष्णु दम्पती आवेश में आकर सम्बन्धविच्छेद के लिए आतुर दिखाई देते हैं। वे यह भी विचार नहीं करते कि उनके इस आचरण का उनकी सन्तति के मानसिक और भावनात्मक विकास पर कितना दुष्प्रभाव पड़ता है।

पिछले कुछ वर्षों से एक और विकृति इस विवाह संस्था में परिलक्षित हो रही है, वह है–समलैंगिक विवाह। प्रचार माध्यमों में 2007, जुलाई मास में कई दिन तक समलैंगिक विवाह के समाचार सुर्खियों में छाए रहे। दो युवतियों का परस्पर विवाह अथवा दो पुरुषों का विवाहसंबंध किस धर्म, किस सम्प्रदाय अथवा किस समाज में मान्य है ? ऐसे विवाह की एक नहीं, तीन–चार घटनाएँ लगातार घटित हुई। अन्ततः इसका परिणाम क्या रहा है ? कुछ ही महीनों या दिनों में ऐसे युगल एक–दूसरे से विलग हो गए। इन युवाओं के समक्ष विवाह का वास्तविक उद्देश्य था ही नहीं। केवल अप्राकृतिक शारीरिक सम्बन्धों से प्राप्त क्षणिक उत्तेजनात्मक आनन्द को ही विवाह सम्बन्ध मान लेना इनके मानसिक दिवालिएपन का उदाहरण है। क्या इस प्रकार के अप्राकृतिक विवाहसम्बन्ध से सन्तानोत्पत्ति और यज्ञ–सम्पादन जैसे धर्मानुकूल उद्देश्य प्राप्त किये जा सकते हैं ? दैहिक आकर्षण से अलग हटकर युवा पीढ़ी को विवाह सम्बन्धों में सनातनधर्म की परम्परा का पालन करना चाहिए।

विवाह सम्बन्धों में विकृति का आधार करने वाली एक और नई परिपाटी सामने आ रही है। आज के भौतिकवादी उपयोगितावादी औद्योगिक वातावरण का दुष्प्रभाव समाज–शास्त्रीय व्यवस्था पर परिलक्षित होने लगा है। कारपोरेट जगत् की चकाचौंध से सन्त्रस्त महानगरीय संस्कृति में युवा पीढ़ी विवाह–सम्बन्धों से दूर होती जा रही है। आज पुरुषों के साथ–साथ युवतियाँ भी बहुराष्ट्रीय कम्पनियों में साफ्टवेयर इन्जीनियर, कम्प्यूटर इन्जीनियर तथा

कम्पनी–प्रबन्ध में प्रबन्धनिदेशक जैसे महत्त्वपूर्ण पदों पर कार्यरत हैं, जहाँ वे अपनी प्रतिभा को प्रमाणित करने के लिए 10 से 12 घण्टे तक कार्य करती हैं। कैरियर बनाने की प्रतिस्पर्धा में इन व्यस्तताओं के कारण इन युवाओं में एक विकृत सोच पनपने लगी है। यह युवा पीढ़ी वैवाहिक जीवन के उत्तरदायित्वों को वहन करने के लिए तैयार नहीं है। अतः ये एक नए प्रकार के सम्बन्ध को स्वीकारने लगे हैं, जिसे आधुनिक भाषा में Living Relationship कहा जाता है। इस सम्बन्ध के अनुसार युवक–युवती एक साथ रहने के लिए तो सहमत हैं, किन्तु विवाह करने के लिए सहमत नहीं हैं। ये लोग सन्तानोत्पत्ति करके परिवार को आगे बढ़ाने में विश्वास नहीं करते। सन्तान को उत्पन्न करने और उसके पालन–पोषण के दायित्व से बचने के लिए ही यह पीढ़ी परिणयसूत्र में नहीं बंधना चाहती। शारीरिक आनन्दानुभूति के लिए एक साथ रहना इन्हें स्वीकार है, किन्तु विवाहबंधन स्वीकार नहीं है।

इसके समानान्तर एक और संस्कृति पनप रही है। इस से प्रभावित युवक–युवती विवाह तो कर लेते हैं, किन्तु अपने–अपने कार्यों की व्यस्तताओं के कारण सन्तानोत्पत्ति से विमुख हो रहे हैं। पति–पत्नी दोनों धनार्जन तो कर रहे हैं, किन्तु सन्तान के दायित्व निभाने का समय उनके पास नहीं है। इस संस्कृति को Dink Culture नाम दिया गया है। Dink अर्थात् Double Income No Kids। यह पीढ़ी भूल रही है कि सन्तान दाम्पत्य प्रेम की पराकाष्ठा है, पति–पत्नी सम्बन्ध का चरम आनन्द सन्तान ही है। आधुनिक पीढ़ी की इस विचारधारा और जीवनशैली से 'सन्तानोत्पत्ति द्वारा पितृऋण से मुक्त होकर प्रजातन्तु का विस्तार' करने का जो सनातन धर्म का आदर्श है, उसकी क्या परिणति होगी?

अभी महानगरों तक सीमित इस विचारधारा को यदि तुरन्त नहीं बदला गया, तो शीघ्र ही यह सोच संचार क्रान्ति और प्रचार माध्यमों के जरिए छोटे नगरों को भी व्याप्त कर लेगी। ऐसे अनैतिक सम्बन्धों का समाजशास्त्रीय व्यवस्था पर कैसा घातक प्रभाव होगा, इसकी कल्पना भी अत्यन्त भयावह है। इन सम्बन्धों के चलते यज्ञादि धार्मिक कृत्यों के सम्पादन की तो विचारणा भी दुष्कर है।

उक्त परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में यह आवश्यक है कि आज की युवा पीढ़ी को सनातन धर्म में विहित वैवाहिक जीवन के सदुद्देश्यों का सम्यक् बोध कराया जाए, जिससे पारिवारिक मूल्यों और समाजशास्त्रीय व्यवस्था के स्वरूप की रक्षा हो सके। युवक और युवती विवाह–संस्कार के तीनों उद्देश्यों – 'धार्मिक कृत्यों का सम्पादन, सन्तानोत्पत्ति द्वारा सृष्टि चक्र का निर्बाध भ्रमण और आनन्दोपलब्धि' की पूर्ति करते हुए एक नैतिक, उत्तरदायी, राष्ट्ररक्षक समाज की संरचना में अपना बहुमूल्य योगदान दे सकें।

डॉ. श्रीमती अरुणा शर्मा
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
संस्कृत विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय
कुरुक्षेत्र

भारत रत्न महामना मदन मोहन मालवीय जयन्ती समारोह

सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब (पंजीकृत) द्वारा अपने संस्थापक महान सनातन धर्मी, शिक्षाशास्त्री एवं स्वतंत्रता सेनानी भारतरत्न महामना मदन मोहन मालवीय जी की 155वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में सप्तऋषि आश्रम हरिद्वार में दिनांक 24, 25 दिसम्बर 2016 को अनेक प्रकार के शैक्षणिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस जयन्ती समारोह में पंजाब, हरियाणा, उत्तराखण्ड, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, उत्तरप्रदेश, दिल्ली एवं चण्डीगढ़ आदि राज्यों की अनेक सनातन धर्म सभाओं, महावीर दलों के सैंकड़ों प्रतिनिधियों एवं सनातन धर्म शिक्षा समिति से सम्बद्ध कॉलेजों एवं स्कूलों के विद्यार्थियों ने बढ़चढ़कर भाग लिया। राष्ट्र की समृद्धि एवं सनातन धर्म के प्रचार–प्रसार के लिए सैंकडों सनातन धर्मियों ने सप्तऋषि आश्रम की ऐतिहासिक यज्ञशाला में हवन किया। तत्पश्चात् भारत रत्न मदन मोहन मालवीय जी की पुरुष–परिमाण प्रतिमा के समक्ष संस्कृत महाविद्यालय के छात्रों ने स्वस्ति वाचन व वैदिक मंत्रों के उच्चार के साथ महामना मदन मोहन मालवीय जी को सैंकडों प्रतिनिधियों द्वारा माल्यार्पण किया गया। स्वामी रामतीर्थ सभागार में आयोजित सम्मेलन में प्रतिनिधि सभा के कार्यवाहक प्रधान श्री इन्द्रमोहन गोस्वामी, महावीर दल के राष्ट्रीय प्रधान महन्त स्वरूप बिहारी शरण, प्रतिनिधि सभा के महासचिव गोस्वामी सरदारी लाल, श्री उपेन्द्र शर्मा, डॉ देशबन्धु, अर्थ एवं कार्यालय मंत्री डॉ आर. पी. विज, प्रचार मंत्री डॉ नन्द किशोर शर्मा आदि ने भारत रत्न मालवीय जी के जीवन से सम्बद्ध अनेक प्रेरक प्रसंगों से विद्यार्थियों को परिचित करवाया।

मालवीय जयन्ती की पूर्व संध्या पर दिनांक 24 दिसम्बर, 2016 को सनातन धर्म शिक्षा समिति के तत्त्वावधान में सामूहिक भजन–गायन एवं मालवीय जी के जीवन पर निबन्ध–लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें शताधिक विद्यार्थियों ने सक्रिय भाग लिया। शिक्षा समिति के कार्यवाहक प्रधान डॉ देशबन्धु ने शिक्षा समिति के अधीन शिक्षा सुधार व शिक्षा–विस्तार के लिए अधिगृहीत किए गए प्रकल्पों की जानकारी दी। सनातन धर्म स्कूलों के शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए बस्सी दौलत खाँ, श्याम चौरासी, गुरदासपुर एवं जालन्धर में कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। विद्यार्थियों को नैतिक मूल्यों की जानकारी देने के लिए स्कूल स्तर पर नैतिक शिक्षा का आयोजन किया गया। शिक्षा समिति ने स्कूलों और कॉलेजों के शिक्षकों को प्रोत्साहित करने के लिए महामना मदन मोहन मालवीय स्मृति सम्मान देने की घोषणा की। यह स्मृति सम्मान मालवीय जी के एकमात्र दीक्षित शिष्य त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेशदत्त जी की पुण्यतिथि पर 10 जून, 2017 को दिए जाएंगे।

सनातन धर्म शिक्षा संस्थाओं के छात्रों को प्रोत्साहित करने के लिए विभिन्न बोर्डों की दसवीं व बारहवीं परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले तथा विश्वविद्यालय स्तर पर स्नातक व स्नातोत्तर कक्षाओं में प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को गोस्वामी गणेशदत्त स्मृति पुरस्कार से पुरस्कृत किया जाएगा।

इस अवसर पर आयोजित सामूहिक भजन प्रतियोगिता के परिणाम इस प्रकार हैं – प्रथम स्थान एस. डी. फुल्लरवान गर्ल्ज सी. सै. स्कूल, जालन्धर, द्वितीय स्थान एस.डी. विद्या स्कूल, अम्बाला छावनी, तृतीय स्थान एच. एस.डी गर्ल्ज सी. सै. स्कूल, गुरदास पुर व सांत्वना पुरस्कार जी.जी.डी.एस.डी. हरयाणा होशियारपुर को प्राप्त हुआ। निबन्ध लेखन प्रतियोगिता के परिणाम इस प्रकार हैं – वरिष्ठ वर्ग – प्रथम स्थान पर कुमारी सुष्मिता, एस. डी. फुल्लरवान गर्ल्ज सी. सै. स्कूल, जालन्धर, द्वितीय स्थान पर श्रीकान्त डोबरियाल, श्री जगदेव सिंह, संस्कृत महाविद्यालय हरिद्वार। तृतीय स्थान पर कुमारी अंकिता शर्मा, एस. डी. फुल्लरवान गर्ल्ज सी. सै. स्कूल, जालन्धर व सांत्वना स्थान पर दमन गम्भीर, सनातन धर्म वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, अम्बाला छावनी रहे। कनिष्ठ वर्ग में प्रथम स्थान पर भारत, सनातन धर्म वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, अम्बाला छावनी, द्वितीय स्थान पर मोहक, एन. के. एस. डी. चान्द पब्लिक स्कूल, पालमपुर, तृतीय स्थान पर संध्या सैनी, सनातन धर्म वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, अम्बाला छावनी व सांत्वना स्थान पर प्रियंका, एस. डी. फुल्लरवान गर्ल्ज सी. सै. स्कूल, जालन्धर रहे।

डॉ नन्द किशोर शर्मा
प्रचार मंत्री

'व्रतोत्सव प्रदर्शिका' का विमोचन

सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा नए सम्वत 2074 की चैत्र शुक्ल प्रतिपदा दिनांक 28 मार्च, 2017 को माता मन्दिर ओखला, नई दिल्ली में एक भव्य समारोह का आयोजन किया गया। बासन्ती नवरात्र के प्रथम दिन माँ दुर्गा की पूजा अर्चना की गई तथा महिला संकीर्तन मंडली द्वारा भजन व संगीत का कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर प्रतिनिधि सभा के कार्यवाहक प्रधान श्री इन्द्रमोहन गोस्वामी जी तथा अर्थ एवं कार्यालय मंत्री डॉ रामपाल विज ने प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रतिवर्ष प्रकाशित की जाने वाली "व्रतोत्सव प्रदर्शिका" का विमोचन किया। प्रतिनिधि सभा के अर्थ व कार्यालय मंत्री डॉ. राजपाल विज ने मन्दिर को जो नया रूप दिया जा रहा है, उस सम्बन्ध में जानकारी दी। ज्योतिषाचार्य पंडित बैनी माधव गोस्वामी ने आशीर्वाद दिया व मन्दिर को नया रूप देने व निर्माण कार्य में श्री रामेश आनन्द द्वारा किये जा रहे कार्य की प्रशंसा की। अंत में सभा के कार्यवाहक अध्यक्ष श्री इंदरमोहन गोस्वामी जी ने सभी उपस्थित अतिथियों व महिला संकीर्तन मंडली का धन्यवाद किया। इस अवसर पर श्री इंदरमोहन गोस्वामी व उनकी धर्मपत्नी, डॉ. राजपाल विज व उनकी धर्मपत्नी, श्री डी. आर. मदान जी व उनकी धर्मपत्नी, श्री विनोद कत्याल व उनकी धर्मपत्नी, दैवेज्ञ पंडित बैनी माधव गोस्वामी, श्री सतीश कुमार गोस्वामी, श्री अशोक कत्याल, श्री अशोक शर्मा, श्री रामेश आनन्द, श्री अरविन्द विज, श्री रमन विज, श्री शेखर गोस्वामी, श्री रिबु गोस्वामी व सभा के कर्मचारी श्री पंत व उनकी धर्मपत्नी व श्री शर्मा जी उपस्थित थे। कार्यक्रम समापन के पश्चात् भोजन की व्यवस्था की व सभी को मां जगदम्बा का प्रसाद भी दिया गया।

– अशोक कत्याल

श्री कटासराज (पाकिस्तान) यात्रा 2017

भारत एवं पाकिस्तान सरकारों के बीच हुई सन्धि के अन्तर्गत पिछले वर्षों की भाँति इस वर्ष भी महाशिवरात्रि के शुभअवसर पर हिन्दू तीर्थ यात्रियों का एक दल 22–2–17 से 28–2–2017 तक श्रीकटासराजधाम पाकिस्तान गया। यात्रा का आयोजन विभिन्न हिन्दू संगठनों को साथ लेकर श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब भूपेन्द्र भवन, पहाड़गंज, नई दिल्ली के द्वारा किया गया। इस यात्रा का नेतृत्व प्रतिनिधि सभा की ओर से पं. वेणीमाधव गोस्वामी जी एवं उप नेता श्री जीवन शौरी जी को सौंपा गया।

21 फरवरी 2017 को सायं काल तक दूर–दूर से तीर्थयात्री दुर्ग्याणा मन्दिर धर्मशाला अमृतसर में एकत्रित हुए। यात्रियों का ठहरने एवं रात्रि भोजन का सुंदर आयोजन दुर्ग्याणा मन्दिर में किया गया था।

22 फरवरी 2017 को तीर्थयात्रीगण ने दुर्ग्याणा मन्दिर में पूजा–अर्चना की। इस के बाद दुर्ग्याणा मन्दिर समिति के द्वारा सभी तीर्थयात्रियों को सरोपे भेंट किये गये तथा विभिन्न वाहनों द्वारा सभी तीर्थयात्री पार्टी लीडर पं. वेणीमाधव गोस्वामी जी के नेतृत्व में श्रीकटासराज के लिए हर–हर महादेव की गूंज के साथ वाघा बार्डर पहुंचे।

बाघा बार्डर पर इमीग्रेसन व कस्टम क्लीयरैंस के पश्चात् यात्री हर हर महादेव, बम बम भोले के नारे लगाते हुए पाकिस्तान की ओर चल पड़े। थोड़ी देर में यात्री पाकिस्तान की सीमा में प्रवेश कर गये। बार्डर पर पाकिस्तान के ETPB के Ministary of Religious Affairs and Inter - Faith Hormony Govt. of Pakistan Chairman Mr. Muhammad Siddiq Ul Farooq ने सभी यात्रियों के गले में हार पहनाकर स्वागत किया तथा यात्रा के लीडर पं. वेणी माधव गोस्वामी जी को गुलदस्ता भेंट किया।

बाघा बार्डर से सभी यात्रीगण बसों द्वारा गुरुद्वारा के लिए गये जहाँ पर रात्रि विश्राम एवं भोजन की समुचित व्यवस्था थी। 23 फरवरी को सभी यात्रियों ने श्रीकटासराजधाम के लिए बसों द्वारा प्रस्थान किया। सभी तीर्थयात्रियों की सुरक्षा वी.आई.पी. की तरह की गयी।

24 फरवरी को श्रीकटासराजधाम में महाशिवरात्रि का आयोजन किया गया। सभी तीर्थयात्रियों ने पवित्र अमरकुण्ड में स्नान किया तथा पूजा अर्चना हवन आदि किया गया। रात्रि में भजन आदि का आयोजन भी किया गया। मन्दिर के चारों ओर पौधे तथा बैठने की उचित व्यवस्था थी। यात्रा के लीडर पं. वेणी माधव गोस्वामी जी ने कहा कि आज महाशिवरात्रि है आज जुमा भी है। उन्होंने हिन्दू एवं मुसलमान की परिभाषा को इस तरह बताया कि ह से हिन्दू एवं म से मुसलमान अर्थात हम एक ही हैं। उन्होंने संस्कृत का एक श्लोक भी कहा –

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुख भाग् भवेत्।

वसुधैव कुटुम्बकम्। यह सारा विश्व ही अपना कुटुम्ब–परिवार है और सारे विश्व के लोग निरोग तथा सुखी रहें। प्रेस वार्ता में उन्होंने कहा कि पाकिस्तान सरकार ने यात्रियों के रहने एवं भोजन की उचित व्यवस्था की है। उन्होंने यात्रियों का हर प्रकार से ध्यान रखा। सारे तीर्थयात्रियों ने मिलकर लगभग एक लाख रुपये की दानराशि मन्दिर के निर्माण के लिए दी। इस धनराशि से हमारे इस पवित्र शिव धाम का कुछ सुधार होगा। पूजा अर्चना के समय भी सभी यात्रियों ने दिल खोलकर दक्षिणा भेंट की।

माहौल कुछ ठीक न होने के कारण यात्री दो दिन पहले ही पाकिस्तान से स्वदेश लौट आये। अन्त में जत्थे के लीडर पं. वेणीमाधव गोस्वामी जी ने पाकिस्तान के अधिकारियों तथा पुलिस कर्मियों का तहे दिल से धन्यवाद किया।

पं. वेणी माधव गोस्वामी

सनातन धर्म महावीर दल की युनिटों के सेवा कार्य

सनातन धर्म महावीर दल पंजाब द्वारा अपनी स्थानीय युनिटों के सहयोग से अनेक प्रकार के सामाजिक व धार्मिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। सनातन धर्म महावीर दल, यमुनानगर द्वारा मेला कपाल मोचन यमुनानगर में दिनांक 10 नवम्बर, 2016 से 14 नवम्बर, 2016 तक अहड वाला मिडल स्कूल में सेवा शिविर लगाया गया जिसमें महावीर दल के सैकड़ों स्वयंसेवकों ने प्रशासन को सहयोग दिया तथा यात्रियों की निस्वार्थ सेवा की। इस सेवा शिविर में निःशुल्क चिकित्सा शिविर लगाया गया तथा यात्रियों के लिए भोजन की व्यवस्था की गई। अमृतसर जिले की महावीर दल की युनिटों ने भी अनेक सामाजिक व धार्मिक कार्यक्रम आयोजित किए जो इस प्रकार हैं–

श्री सनातन धर्म महावीर दल पुतलीघर : इस वर्ष इस दल व सभा ने अपने परम्परा गत सभी त्यौहारों को बड़ी श्रद्धा अनुसार मनाया। जिसमें शिवरात्रि महापर्व पर एक सप्ताह इलाका में प्रभात फेरियों का आयोजन किया व पर्व पर लंगर लगाया। नवरात्रों में श्री रामायण जी के 108 पाठों के भोग डाले जो पिछले 50 सालों से किये जा रहे हैं तथा लंगर लगाया गया। इस वर्ष मन्दिर के अन्दर व प्रांगन में मार्बल लगाया गया है। जो भूमि ली गई थी उसमें 1300 फुट का लैंटर डाला गया है।

मन्दिर महावीर दल रामेश्वर शिवाला, राधा कृष्णा मन्दिर के हाल में मार्बल दरवाजे, खिड़कियां लगाई गई हैं। दर्शनी द्वार पर भी मार्बल लगवाया गया है। लोगों की सेवा के लिए स्नानगृह, पानी की मशीन लगवाई गई है। सभी धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। श्री सनातन धर्म महावीर दल द्वारा विद्यालय में नये कमरों को बनवाया गया

श्री सनातन धर्म महावीर दल कृष्णा नगर : इस महावीर दल ने अपने सभी धार्मिक कार्यक्रम बड़ी श्रद्धा से सम्पन्न किये। जिसमें शिवरात्रि, दोनों नवरात्रे (अस्सु व चैत्र) में 108 दुर्गा स्तुति व रामायण के पाठों के भोग डाले। यह कार्यक्रम 1962 के भारत–चीन युद्ध के शहीदों के प्रति प्रारम्भ किये गये। और इस परम्परा द्वारा देश के शहीदों की हर वर्ष याद किया जाता है।

चौरस्ती अटारी महावीर दल व सभा के द्वारा हनुमान जयंती, सप्ताहिक मंगलवार संकीर्तन, जल सेवा, औषधालय सेवा पिछले कई सालों से चलाई जा रही हैं। नवरात्रों में हनुमान जयंती पर शहर में शोभा यात्रा निकाली जाती है। भवन के बाहर इस साल ठंडे जल की मशीन लगवाई गई है। महावीर दल द्वारा बच्चों को प्रतिदिन गचका सिखाया जाता है जो कि प्रदेश के अलग–अलग संस्थाओं द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में भाग देकर सेवा कर रहे हैं।

छेहरटा महावीर दल द्वारा अपने सभी धार्मिक कार्यक्रम हनुमान जयंती, शिवरात्रि, जन्म अष्टमी, तुलसी विवाह श्री रामायण जी के पाठों द्वारा मनाया गया। मंदिर में साप्ताहिक कथा का आयोजन किया गया। जिसमें देहरादून से 1008 स्वामी बाल मुकन्द जी महाराज सरस्वती द्वारा लोगों को अमृतपान करवाया व भण्डारा लगाया गया। संस्था द्वारा होम्योपैथिक औषधालय भी चलाया जा रहा है।

जनकराज बावा

एवं आर.के. कौशिक

समाचार पत्रों की सुर्खियों में सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा व अन्तरंग संस्थाएँ

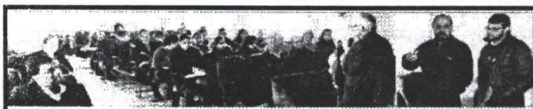

जी.जी. डी.एस.डी. कालेज में शिक्षा के स्तर को ऊपर उठाने एवं सुधार लाने हेतु करवाए सैमीनार का दृश्य। (आनंद)

वर्कशाप अध्यापकों को नई दिशा प्रदान करेगी : डा. देश बंधु शर्मा

हरियाना, 19 फरवरी (आनंद): गोस्वामी गणेश दत्त सनातन धर्म कालेज हरियाना में प्र. डा. गुरदीप शर्मा के नेतृत्व में श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब की शिक्षा समिति की ओर से शिक्षा के स्तर को ऊपर उठाने एवं व्यापक सुधार लाने के लक्ष्य को लेकर 2 दिवसीय वर्कशाप का आयोजन किया गया। श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब के कार्यकारी अध्यक्ष प्रि. डा. देश बंधु शर्मा की अध्यक्षता में आयोजित की गई वर्कशाप में विद्वान डा. गुनीत, डा. सोहन सिंह तथा डा. रविन्द्र बतौर रिसोर्सपर्सन शामिल हुए। इस सैमीनार में श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा से संबंधित कालेजों तथा स्कूलों के 100 के करीब अध्यापकों ने भाग लिया। इस मौके शिक्षा संबंधी पेश आ रही अनेक समस्याओं पर ध्यान केंद्रित करते हुए उनमें व्यापक स्तर पर सुधार लाने के लिए गम्भीरता से विचार-

पर चलते हुए रोका जा सकता है आदि मुख्य विषय रहे। इस दौरान प्रि. डा. देश बंधु शर्मा ने कहा कि शिक्षा के स्तर को ऊपर उठाने एवं व्यापक सु... वर्कशाप अ... करने के लि... कालेज... मुखी पंजाब... संबोधित क... में अध्यापकों... परिपक्व करते... का प्रयोग क... पढ़ाई में पैदा... जा सके। इ... मुखी अंग्रेज... इन्दु बाला, ... शर्मा, प्रि. अ... राजीव कुमा...

ਕੁਮਾਰ ਝਾਅ ਸੋਨ ਤਮਗਾ ਜਿੱਤਣ 'ਤੇ ਸਨਮਾਨਿਤ

...ਈ (ਆਨੰਦ)-ਜੀ.ਜੀ. ...ਲਜ ਹਰਿਆਣਾ ਵਿਖੇ ...ਪ ਕੁਮਾਰ ਸ਼ਰਮਾ ਵੱਲੋਂ ...ਝਾਅ ਦਾ ਸੋਨ ਤਮਗਾ ...ਜੀਤਾ ਗਿਆ। ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲ ...ਸ਼ਰਮਾ ਨੇ ਦੱਸਿਆ ਕਿ ...ਭਾਰਟ ਖੇਡਾਂ 2017 ...ਹਰ ਗੋਹਾਨਾ (ਸੋਨੀਪਤ) ...ਖੇਡਾਂ ਵਿਚ ਦੇਸ਼ ਭਰ ...ਖਿਡਾਰੀਆਂ ਨੇ ਭਾਗ ...ਸਥਾਨਕ ਕਾਲਜ ਦੇ ...ਸ਼ ਕੁਮਾਰ ਝਾਅ ਨੇ 60 ...ਮ ਕੈਟਾਗਰੀ ਵਿਚ

ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲ ਡਾ. ਗੁਰਦੀਪ ਕੁਮਾਰ ਸ਼ਰਮਾ ਨਿਤਿਸ਼ ਕੁਮਾਰ ਝਾਅ ਦਾ ਸੋਨ ਤਮਗਾ ਜਿੱਤਣ 'ਤੇ ਸਨਮਾਨ ਕਰਦੇ ਹੋਏ, ਨਾਲ ਹੋਰ। (ਆਨੰਦ)

ਤਮਗਾ 'ਤੇ ਕਬਜ਼ਾ ਕੀਤਾ। ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲ ਡਾ. ਗੁਰਦੀਪ ਕੁਮਾਰ ਸ਼ਰਮਾ ਨੇ ਸਰੀਰਕ ਸਿੱਖਿਆ ...

ਜਸਵੰਤ ਸਿੰਘ, ਪ੍ਰੋ. ਮਨੋਹਰ ਲਾਲ ਕੌਸ਼ਲ, ਡਾ. ਨੀਰਜ ਸੰਘਰ, ਡਾ. ਰਾਜੀਵ ਕੁਮਾਰ, ...

बैठक में स्कूलों, कालेजों तथा विभिन्न संस्थाओं के बजट व प्रस्ताव किए पास

हरियाना, 2 मई (भूषण) : उत्तरी भारत की प्रसिद्ध संस्था श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब, नई दिल्ली के अध्यक्ष डा. शिव कुमार शर्मा की अध्यक्षता में वार्षिक कार्यकारिणी की उच्च स्तरीय बैठक का आयोजन स्थानीय गोस्वामी गणेश दत्त सनातन धर्म कालेज में हुआ, जिसमें सभा के समूह ...

...न धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब, नई दिल्ली की हरियाना कालेज ...क का दृश्य।

...ओं के प्रधानाचार्य व अन्य ... प्रतिनिधियों की ओर से ...ट व प्रस्ताव पेश किए गए ... चर्चा के उपरांत पास किया ... की कार्रवाई का विवरण ...सचिव डा. देश बंधु शर्मा तथा आर्गेनाइजर सचिव डा. गुरदीप शर्मा ने बताया कि बैठक में जगदेव सिंह संस्कृत महाविद्यालय सप्तऋषि आश्रम हरिद्वार, गोस्वामी गणेश दत्त भवन चंडीगढ़ व कार्यालय भूपेन्द्रा भवन, पहाड़ गंज नई तथा श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब व दिल्ली की उप समितियों ने भी अपनी अपनी बजट रिपोर्ट पेश की, जिस पर समूह उपस्थिति ने अपनी स्वीकृति प्रदान की। सप्तऋषि आश्रम हरिद्वार में गौशाला के संचालन हेतु बजट की भी समुचित व्यवस्था की गई है। इनके अतिरिक्त कई अन्य प्रस्तावों के अध्यक्ष डा. शिव कुमार शर्मा ने अपने विचार रखे। इस अवसर पर कार्यवाहक अध्यक्ष आई.एम. गोस्वामी, कार्यालय व वित्त सचिव डा. आर.पी. लिज, पूर्व मंत्री उपेन्द्र शर्मा महासचिव, प्रिंसीपल गुरुदत्त शर्मा उपाध्यक्ष, सरदारी लाल गोस्वामी महासचिव, मनिन्द्र शर्मा गुरदासपुर, प्रि. विवेक शर्मा पालमपुर, डा. नंद किशोर शर्मा प्रचार सचिव, स्वरूप कौशिक प्रधान महावीर दल पंजाब, प्रि. अनिल हांडा, प्रि. नीलम शर्मा सहित कई अन्य शामिल थे।

एसडी फुल्लरवान का +2 का रिजल्ट शानदार

जालंधर | एसडी फुल्लरवान गर्ल्स सी.से. स्कूल की 12वीं का परिणाम 100 फीसदी रहा। साइंस ग्रुप में तरणप्रीत कौर ने पहला, राबिया ने दूसरा और पवनप्रीत ने तीसरा स्थान लिया। कॉमर्स में शिल्पा ... आंचल ने दूसरे और कोमल शर्मा ने तीसरे स्थान पर कब्जा ... आर्ट्स ग्रुप में रुपा ने पहली, अंजली देवी ने दूसरी और किर...

महावीर दल ने करवाए जरूरतमंद परिवारों की लड़कियों के विवाह

ਸਿੱਖਿਆ ਦੇ ਪੱਧਰ ਨੂੰ ਉੱਚਾ ਚੁੱਕਣ ਸਬੰਧੀ ਵਰਕਸ਼ਾਪ ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਨੂੰ ਨਵੀਂ ਦਿਸ਼ਾ ਦੇਵੇਗੀ : ਡਾ. ਸ਼ਰਮਾ

ਕਾਲਜ ਵਿਖੇ ਲਾਈ 2 ਰੋਜ਼ਾ ਵਰਕਸ਼ਾਪ ਦੇ ਦ੍ਰਿਸ਼। (ਆਨੰਦ)

ਹਰਿਆਣਾ, 19 ਫਰਵਰੀ (ਆਨੰਦ) - ਜੀ.ਜੀ.ਡੀ ਐਸ ਡੀ ਕਾਲਜ ਹਰਿਆਣਾ ਵਿਖੇ ਪ੍ਰਿੰ. ਡਾ. ਗੁਰਦੀਪ ਸ਼ਰਮਾ ਦੀ ਅਗਵਾਈ 'ਚ ਸ੍ਰੀ ਸਨਾਤਨ ਧਰਮ ਪ੍ਰਤੀਨਿਧੀ ਸਭਾ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਸਿੱਖਿਆ ਬੋਰਡ ਵੱਲੋਂ ਸਿੱਖਿਆ ਦੇ ਪੱਧਰ ਨੂੰ ਉੱਚਾ ਚੁੱਕਣ ਅਤੇ ਸੁਧਾਰ ਲਿਆਉਣ ਸਬੰਧੀ 2 ਰੋਜ਼ਾ ਵਰਕਸ਼ਾਪ ਦਾ ਸਫਲ ਆਯੋਜਨ ਕੀਤਾ ਗਿਆ। ਇਸ ਵਰਕਸ਼ਾਪ 'ਚ ਸਭਾ ਨਾਲ ਸੰਬੰਧਿਤ ਕਾਲਜਾਂ ਤੇ ਸਕੂਲਾਂ ਦੇ 100 ਦੇ ਕਰੀਬ ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਨੇ ਭਾਗ ਲਿਆ। ਸ੍ਰੀ ਸਨਾਤਨ ਧਰਮ ਪ੍ਰਤੀਨਿਧੀ ਸਭਾ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਕਾਰਜਕਾਰੀ ਪ੍ਰਧਾਨ ਪ੍ਰਿੰ. ਡਾ. ਦੇਸ਼ਬੰਧੂ ਸ਼ਰਮਾ ਦੀ ਪ੍ਰਧਾਨਗੀ ਹੇਠ ਲਾਈ ਵਰਕਸ਼ਾਪ 'ਚ ਪ੍ਰਸਿੱਧ ਵਿਦਵਾਨ ਡਾ. ਗੁਨੀਤ, ਡਾ. ਸੋਹਣ ਸਿੰਘ ਅਤੇ ਡਾ. ਰਵਿੰਦਰ ਬਤੌਰ ਰਿਸੋਰਸਪਰਸਨ ਸ਼ਾਮਲ ਹੋਏ, ਜਿਸ ਵਿਚ ਕਾਲਜ ਤੇ ਸਕੂਲ ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਨੂੰ ਸਿੱਖਿਆ ਸਬੰਧੀ ਪੇਸ਼ ਆ ਰਹੀਆਂ ਸਮੱਸਿਆਵਾਂ 'ਤੇ ਧਿਆਨ ਕੇਂਦਰਿਤ ਕਰਵਾਇਆ ਗਿਆ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ 'ਚ ਵਿਆਪਕ ਪੱਧਰ 'ਤੇ ਸੁਧਾਰ ਲਿਆਉਣ ਲਈ ਵਿਚਾਰ ਵਟਾਂਦਰਾ ਕੀਤਾ ਗਿਆ। ਇਸ ਦੌਰਾਨ ਸਿੱਖਿਆ ਨੂੰ ਕਿਵੇਂ ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ ਲਈ ਰੋਚਕ ਬਣਾਇਆ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਕਿਵੇਂ ਨਵੀਂ ਪੀੜ੍ਹੀ ਨੂੰ ਗਲਤ ਰਸਤੇ 'ਤੇ ਚੱਲਣ ਤੋਂ ਰੋਕਿਆ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ, ਬਾਰੇ ਵੀ ਵਿਚਾਰ ਵਟਾਂਦਰਾ ਕੀਤਾ ਗਿਆ।

ਪ੍ਰਿੰ. ਸ਼ਰਮਾ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਸਿੱਖਿਆ ਸੁਧਾਰਾਂ ਲਈ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੀ ਵਰਕਸ਼ਾਪ ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਨੂੰ ਇਕ ਨਵੀਂ ਸੇਧ ਦੇਵੇਗੀ। ਇਸ ਮੌਕੇ ਕਾਲਜ ਦੇ ਪੰਜਾਬੀ ਵਿਭਾਗ ਦੇ ਮੁਖੀ ਡਾ. ਜਸਪਾਲ ਸਿੰਘ ਨੇ ਵੀ ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਨੂੰ ਸੰਬੋਧਨ ਕਰਦਿਆਂ ਕਿਹਾ ਕਿ ਅਜੋਕੇ ਸਮੇਂ ਵਿਚ ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਹੁਨਰ ਨੂੰ ਹੋਰ ਪਕੇਰਾ ਕਰਦਿਆਂ ਰੋਚਕ ਤੇ ਵਧੀ... ਢੰਗ ਤਰੀਕੇ ਵਰ... ਚਾਹੀਦੇ ਹਨ ਤਾਂ... ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ... ਪੜ੍ਹਾਈ 'ਚ ਦਿਲ... ਉਦਾਸੀਨਤਾ ਨੂੰ... ਕੀਤਾ ਜਾ ਸਕੇ।

ਇਸ ਮੌਕੇ ਕਾ... ਦੇ ਅਧਿਆਪਕ... ਇੰਦੂ ਬਾਲਾ ਸ਼ਰਮਾ, ਐੱਮ. ਐੱਲ. ਕੌਸ਼ਲ, ਡਾ. ਜਸਪਾਲ ਸਿੰ... ਮੁਖੀ ਅੰਗਰੇਜ਼ੀ ਵਿਭਾਗ, ਡਾ. ਨੀਰਜ ਸੰ... ਡਾ. ਰਾਜੀਵ ਕੁਮਾਰ, ਡਾ. ਜਸਵੰਤ ਸਿੰ... ਪ੍ਰੋ. ਰਾਜੀਵ ਕੁਮਾਰ, ਪ੍ਰੋ. ਮਨਜ... ਡਾ. ਹਰਵਿੰਦਰ ਕੌਰ, ਸਕੂਲ ਪ੍ਰਿੰ. ... ਕੌਰ, ਪ੍ਰਿੰ. ਨੀਲਮ ਸ਼ਰਮਾ, ਪ੍ਰਿੰ. ਅਨਿ... ਹਾਂਡਾ, ਨਿਸ਼ਾਨ ਸਿੰਘ, ਮੈਡਮ ... ਮੈਡਮ ਸੁਨੀਤਾ ਸਧੀਰ, ਮੈਡਮ ... ਸ਼ਰਮਾ, ਪ੍ਰੋ. ਗੁਰਪ੍ਰੀਤ ਕੌਰ, ... ਜਰਿਆਲ, ਨਿਰਮਲ ਸਿੰਘ, ਰਾਜਨ ਕੁਮਾ... ਇੰਦਰਜੀਤ ਸਿੰਘ, ਵਿਜੇ ਸਿੰਘ, ਦੀ... ਕੁਮਾਰ ਆਦਿ ਵੀ ਹਾਜ਼ਰ ਸਨ।

ਸਨਾਤਨ ਧਰਮ ਪ੍ਰਤੀਨਿਧੀ ਸਭਾ ਨੇ ਸਕੂਲਾਂ-ਕਾਲਜਾਂ ਤੇ ਹੋਰ ਸੰਸਥਾਵਾਂ ਦੇ ਬਜਟ ਤੇ ਮਤੇ ਕੀਤੇ ਪਾਸ

ਹਰਿਆਣਾ, 2ਮਈ (ਆਨੰਦ)-ਉੱਤਰੀ ਭਾਰਤ ਦੀ ਪ੍ਰਸਿੱਧ ਸੰਸਥਾ ਸ੍ਰੀ ਸਨਾਤਨ ਧਰਮ ਪ੍ਰਤੀਨਿਧੀ ਸਭਾ ਪੰਜਾਬ, ਨਵੀਂ ਦਿਲੀ ਦੇ ਪ੍ਰਧਾਨ ਡਾ. ਸ਼ਿਵ ਕੁਮਾਰ ਸ਼ਰਮਾ ਦੀ

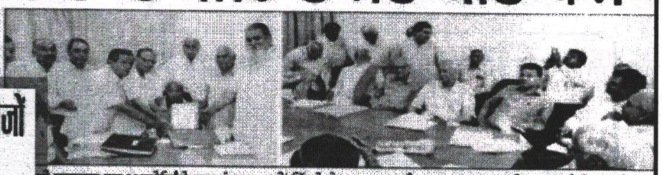

...ਸ੍ਰੀ ਸਨਾਤਨ ਧਰਮ ਪ੍ਰਤੀਨਿਧੀ ਸਭਾ ਪੰਜਾਬ ਨਵੀਂ ਦਿਲੀ ਦੇ ਪ੍ਰਧਾਨ ਡਾ. ਸ਼ਿਵ ਕੁਮਾਰ ਸ਼ਰਮਾ ਦੀ ਪ੍ਰਧਾਨਗੀ ਹੇਠ ਹੋਈ ਕਾਰਜਕਾਰਨੀ ਦੀ ਉੱਚ ਪੱਧਰੀ ਮੀਟਿੰਗ ਦੇ ਦ੍ਰਿਸ਼। (ਆਨੰਦ)

...ਬਜਟ ਪੇਸ਼ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਅਤੇ ...ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਪਾਸ ਕੀਤਾ ਗਿਆ। ...ਨਾਲ ਹੀ ਸਭਾ ਵੱਲੋਂ ਕਈ ਹੋਰ ...ਪਾਸ ਕੀਤੇ ਗਏ। ...ਮੀਟਿੰਗ ਦੀ ਕਾਰਵਾਈ ਸਬੰਧੀ ...ਦਿੰਦੇ ਹੋਏ ਡਾ. ਦੇਸ਼ਬੰਧੂ ਸ਼ਰਮਾ

ਦੇ ਮੁੱਖ ਦਫਤਰ ਭੂਪਿੰਦਰਾ ਭਵਨ ਨਵੀਂ ਦਿਲੀ ਨੇ ਆਪਣੇ-ਆਪਣੇ ਕੰਮਾਂ-ਕਾਰਾਂ ਅਤੇ ਬਜਟ ਦੀ ਰਿਪੋਰਟ ਪੇਸ਼ ਕੀਤੀ, ਜਿਸ 'ਤੇ ਸਾਰੇ ਮੈਂਬਰਾਂ ਨੇ ਆਪਣੀ ਸਹਿਮਤੀ ਪ੍ਰਗਟ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਪ੍ਰਵਾਨਗੀ ਦਿੱਤੀ। ਸਪਤਰਿਸ਼ੀ ਆਸ਼ਰਮ ਹਰਿਦੁਆਰ ਵਿਖੇ

ਸਿੱਖਿਆ ਤੇ ਹੋਰ ਸਮਾਜਿਕ ਕੰਮਾਂ ਦੇ ਪ੍ਰਚਾਰ-ਪ੍ਰਸਾਰ ਲਈ ਨਿਰੰਤਰ ਕਿਰਿਆਸ਼ੀਲ ਹੈ। ਮੀਟਿੰਗ 'ਚ ਹੋਰਨਾਂ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ ਕਾਰਜਕਾਰੀ ਪ੍ਰਧਾਨ ਆਈ. ਐੱਮ. ਗੋਸਵਾਮੀ, ਵਿੱਤ ਸਕੱਤਰ ਡਾ. ਆਰ. ਪੀ. ਵਿਜ, ਸਾਬਕਾ ਮੰਤਰੀ ਉਪਿੰਦਰ ਸ਼ਰਮਾ ...ਨ ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲ ...ਗੋਸਵਾਮੀ, ...ਰ, ਸਵਰੂਪ ...ਲ ਪੰਜਾਬ, ..., ਡਾ. ਨੰਦ ...ਹਾਂਡਾ, ਪ੍ਰਿੰ... ਹਾਜ਼ਰ ਸਨ

सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा की बैठक में स्कूलों, कालेजों तथा विभिन्न संस्थाओं के बजट व प्रस्ताव किए पास

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब, नई दिल्ली की हरियाना कालेज में हुई बैठक के दृश्य। (आनंद)

हरियाना, 2 मई (आनंद): उत्तरी भारत की प्रसिद्ध संस्था श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब, नई दिल्ली के अध्यक्ष डा. शिव कुमार शर्मा की अध्यक्षता में वार्षिक कार्यकारिणी की उच्च स्तरीय बैठक का आयोजन गोस्वामी गणेश दत्त सनातन धर्म कालेज में हुआ। सभा के महासचिव डा. देश बन्धु शर्मा द्वारा प्रतिनिधि सभा की समस्त गतिविधियों व कार्यकलापों की रिपोर्ट पेश की गई। इसके उपरांत श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब, सभा द्वारा संचालित स्कूलों, कालेजों के प्रधानाचार्य व अन्य संस्थाओं के प्रतिनिधियों की ओर से वार्षिक बजट व प्रस्ताव पेश किए गए जिन्हें विचार चर्चा के उपरांत पास किया गया।

महासचिव डा. देश बंधु शर्मा तथा आर्गेनाइजर सचिव डा. गुरदीप शर्मा ने बताया कि बैठक में जगदेव सिंह संस्कृत महाविद्यालय सप्तऋषि आश्रम हरिद्वार, गोस्वामी गणेश दत्त भवन चंडीगढ़ तथा श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब मुख्य कार्यालय भूपेन्द्रा भवन, पहाड़ गंज नई दिल्ली की उप-समितियों ने भी अपनी-अपनी बजट रिपोर्ट पेश की जिस पर समूह उपस्थिति ने अपनी स्वीकृति प्रदान की। सप्तऋषि आश्रम हरिद्वार में गौशाला के संचालन हेतु बजट की भी समुचित व्यवस्था की गई है।

सभा के अध्यक्ष डा. शिव कुमार शर्मा ने कहा कि श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा अपने निर्धारित धार्मिक, शैक्षणिक एवं सामाजिक कार्यों के प्रचार एवं प्रसार में निरंतर क्रियाशील है।

यह भी थे मौजूद : आई.एम. गोस्वामी, डा. आर.पी. विज, पूर्व मंत्री उपेन्द्र शर्मा महासचिव, प्रि. गुरुदत्त शर्मा उपाध्यक्ष, सरदारी लाल गोस्वामी महासचिव, मनिन्द्र शर्मा गुरदासपुर, प्रि. विवेक शर्मा पालमपुर, डा. नंद किशोर शर्मा, स्वरूप कौशिक, प्रि. अनिल हांडा, प्रि. नीलम शर्मा।

पंजाब केसरी ई-पेपर Wed, 03 May 2017 epaper punjabkesari.in//c/18758425

...ਜਾਂ ਦੇ ਬਜਟ 'ਤੇ ਮਤੇ ਪਾਸ

...ਹੋਰ ਮੁੱਖ ਸ਼ਖ਼ਸੀਅਤਾਂ। ਪੰਜਾਬੀ ਜਾਗਰਣ

ਵਿਚਾਰਾਂ

- ਸ੍ਰੀ ਸਨਾਤਨ ਧਰਮ ਪ੍ਰਤੀਨਿਧੀ ਸਭਾ ਪੰਜਾਬ ਦੀ ਮੀਟਿੰਗ
- ਸਭਾ ਵੱਲੋਂ ਚਲਾਈਆਂ ਜਾ ਰਹੀਆਂ ਸਰਗਰਮੀਆਂ ਦੀ ਰਿਪੋਰਟ ਪੇਸ਼

ਸਰਦਾਰੀ ਲਾਲ ਗੋਸਵਾਮੀ ਦੇ ਮੰਗਲਾਚਰਨ ... ਵੱਲੋਂ ਸਲਾਨਾ ਬਜਟ ਪੇਸ਼ ਕੀਤੇ ਗਏ ਤੇ ਚਰਚਾ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਪਾਸ ਕੀਤਾ ਗਿਆ। ਇਸ ਦੇ ਨਾਲ ਨਾਲ ਸਭਾ ਵੱਲੋਂ ... ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਮੁੱਖ ਦਫਤਰ ਭੁਪਿੰਦਰ ਭਵਨ ਨਵੀਂ ਦਿਲੀ ਦੀ ਉਪ ਕਮੇਟੀਆਂ ਨੇ ਆਪਣੇ ਆਪਣੇ ਕੰਮਾਂਕਾਰਾਂ ਤੇ ਬਜਟ ਦੀ ਰਿਪੋਰਟ ...ਸਾਰੇ ਮੈਂਬਰਾਂ ਨੇ ਆਪਣੀ ...ਟ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਪ੍ਰਵਾਨਗੀ ...ਰਿਸ਼ੀ ਆਸ਼ਰਮ ਹਰਿਦੁਆਰ ...ਾਂ ਦੇ ਹੋਰ ਜ਼ਿਆਦਾ ਸੁਧਾਰ ਬਜਟ ਦੀ ਵਿਵਸਥਾ ਦਾ ...ਸ ਕੀਤਾ ਗਿਆ। ਸਭਾ ਦੇ ...ਕੁਮਾਰ ਸ਼ਰਮਾ ਨੇ ਸਮੂਹ

ਕਿ ਸਨਾਤਨ ਧਰਮ ਪ੍ਰਤੀਨਿਧੀ ਸਭਾ ਆਪਣੇ ਨਿਰਧਾਰਿਤ ਉਦੇਸ਼ਾਂ ਧਾਰਮਿਕ, ਸਿੱਖਿਆ ਤੇ ਹੋਰ ਸਮਾਜਿਕ ਕੰਮਾਂ ਦੇ ਪ੍ਰਚਾਰ ਤੇ ਪ੍ਰਸਾਰ ਲਈ ਨਿਰੰਤਰ ਕ੍ਰਿਆਸ਼ੀਲ ਹੈ।

ਇਸ ਦੌਰਾਨ ਮੀਟਿੰਗ 'ਚ ਹੋਰਨਾਂ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ ਕਾਰਜਕਾਰੀ ਪ੍ਰਧਾਨ ਆਈਐਮ ਗੋਸਵਾਮੀ, ਵਿੱਤ ਸਕੱਤਰ ਡਾ. ਆਰਪੀ ਵਿਜ, ਸਾਬਕਾ ਮੰਤਰੀ ਉਪਿੰਦਰ ਸ਼ਰਮਾ ਜਨਰਲ ਸਕੱਤਰ, ਉਪ ਪ੍ਰਧਾਨ ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲ ਗੁਰੁਦਿੱਤ ਸ਼ਰਮਾ, ਸਰਦਾਰੀ ਲਾਲ ਗੋਸਵਾਮੀ, ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲ ਵਿਵੇਕ ਸ਼ਰਮਾ ਪਾਲਮਪੁਰ, ਸਵਰੂਪ ਕੌਸ਼ਿਕ ਪ੍ਰਧਾਨ ਮਹਾਵੀਰ ਦਲ ਪੰਜਾਬ, ਮਨਿੰਦਰ ਸ਼ਰਮਾ ਗੁਰਦਾਸਪੁਰ, ਡਾ. ਨੰਦ ਕਿਸ਼ੋਰ ਸ਼ਰਮਾ, ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲ ਅਨਿਲ ਹਾਂਡਾ, ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲ ਨੀਲਮ ਰਾਣੀ ਸਮੇਤ ਕਈ...

ਲੋਕ ਰਹਿਣਗੇ ਡਾ. ਗੁਰਦੀਪ ਦੇ ਰਿਣੀ

ਖ਼ਾਸ ਸ਼ਖ਼ਸੀਅਤ

- ਸੰਸਥਾ ਵਾਂਗ ਕੰਮ ਕਰ ਰਹੇ ਹਨ ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲ ਡਾ. ਗੁਰਦੀਪ ਸ਼ਰਮਾ
- ਡਾ. ਗੁਰਦੀਪ ਨੇ ਵਿਦਿਆ ਦੇ ਖੇਤਰ 'ਚ ਨਿਭਾਈ ਵਡਮੁੱਲੀ ਸੇਵਾ

ਪੱਤਰ ਪ੍ਰੇਰਕ, ਹਰਿਆਣਾ : ਜ਼ਿਲ੍ਹਾ ਹੁਸ਼ਿਆਰਪੁਰ ਦੇ ਕਸਬਾ ਹਰਿਆਣਾ ਵਿਖੇ ਜੀਜੀਡੀਐੱਸਡੀ ਕਾਲਜ ਹਰਿਆਣਾ 'ਚ ਪਿਛਲੇ ਕਰੀਬ 16 ਸਾਲ ਤੋਂ ਬਤੌਰ ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲ ਦੀਆਂ ਸੇਵਾਵਾਂ ਨਿਭਾ ਰਹੇ ਡਾ. ਗੁਰਦੀਪ ਕੁਮਾਰ ਸ਼ਰਮਾ ਜ਼ਿਲ੍ਹਾ ਹੁਸ਼ਿਆਰਪੁਰ ਦੇ ਪੇਂਡੂ ਤੇ ਕੰਢੀ ਖੇਤਰ 'ਚ ਸਿੱਖਿਆ ਦੀ ਰੋਸ਼ਨੀ ਵੰਡਣ ਵਾਲੇ ਮੋਹਰੀ ਤੇ ਜ਼ਿੰਮੇਵਾਰ ਸ਼ਖ਼ਸੀਅਤ ਵਜੋਂ ਪਛਾਣ ਬਣਾਈ ਹੈ। ਡੀਏਵੀ ਕਾਲਜ ਜਲੰਧਰ ਤੋਂ ਐੱਮਏ ਇਤਿਹਾਸ ਤੇ ਫਿਰ ਐੱਮ ਫਿਲ ਤੇ ਪੀਐੱਚਡੀ ਤਕ ਦੀ ਸਿੱਖਿਆ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਡਾ. ਸ਼ਰਮਾ ਨੇ 1982 ਤੋਂ 2000 ਤਕ ਕਰੀਬ ਸਾਢੇ ਅਠਾਰਾਂ ਸਾਲ ਤਕ ਜੀਜੀਡੀਐੱਸਡੀ ਕਾਲਜ ਹਰਿਆਣਾ ਵਿਖੇ ਬਤੌਰ ਲੈਕਚਰਾਰ ਇਤਿਹਾਸ ਆਪਣੀਆਂ ਸੇਵਾਵਾਂ ਨਿਭਾਈਆਂ ਤੇ ਫਿਰ ਸੰਨ ਦੋ ਹਜ਼ਾਰ ਤੋਂ ਲੈ ਕੇ ਹੁਣ ਤਕ ਇਸੇ ਕਾਲਜ 'ਚ ਬਤੌਰ ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲ ਵਡਮੁੱਲੀ ਸੇਵਾ ਨਿਭਾਅ ਰਹੇ ਹਨ। ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲ ਦੇ ਸ਼ਾਸ਼ਨ ਕਾਲ ਦੌਰਾਨ ਡਾ. ਗੁਰਦੀਪ ਨੇ ਪੇਂਡੂ ਖੇਤਰ ਦੇ ਕਾਲਜ ਦੀ ਕਾਇਆ ਹੀ ਨਹੀ ਬਦਲੀ ਸਗੋਂ ਕਾਲਿਜ 'ਚ ਬੀਐੱਸਸੀ, ਬੀਕਾਮ, ਬੀਸੀਏ, ਪੀਜੀਡੀਸੀਏ, ਐੱਮਏ ਇਤਿਹਾਸ ਤੇ ਪੰਜਾਬੀ ਦੀਆਂ ਕਲਾਸਾਂ ਬੀਐੱਸ ਸ਼ੁਰੂ ਕਰਾਉਣ 'ਚ ਵੀ ਵੱਡਮੁਲਾ ਯੋਗਦਾਨ ਪਾਇਆ। ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ ਦੀ ਸਹੂਲਤ ਲਈ ਕਾਲਜ ਕੈਂਪਸ 'ਚ ਆਧੁਨਿਕ ਸਾਇੰਸ ਲੈਬਜ਼, ਕੰਪਿਊਟਰ ਲੈਬਜ਼, ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ ਪੱਧਰ ਦਾ ਸੈਮੀਨਾਰ ਹਾਲ, ਵਿਸ਼ਾਲ ਪੁਸਤਕਾਂ ਵਾਲੀ ਲਾਇਬ੍ਰੇਰੀ ਉਪਲੱਬਧ ਕਰਾਉਣਾ ਤੇ ਕਾਲਜ ਕੈਂਪਸ 'ਚ ਕਈ ਵਾਰੀ ਖੇਤਰੀ ਯੁਵਕ ਮੇਲੇ ਤੇ 2012 'ਚ ਇੰਟਰ ਜ਼ੋਨਲ ਯੁਵਕ ਮੇਲਾ ਕਰਾਉਣਾ ਵੀ ਡਾ. ਸ਼ਰਮਾ ਦੀਆਂ ਪ੍ਰਾਪਤੀਆਂ 'ਚ ਗਿਣਿਆ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ ਡਾ. ਸ਼ਰਮਾ ਨੂੰ ਪੰਜਾਬ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ ਦੀ ਅਨਫੇਅਰ ਮੀਨਜ਼ ਕਮੇਟੀ 2015, ਪੀਯੂ ਦੀ ਐਫਿਲੀਏਸ਼ਨ ਕਮੇਟੀ 2015, 16 ਤੇ ਪੀਯੂ ਦੀ ਜੁਇੰਟ ਕਨਸਲਟੇਟਿਵ ਮਸ਼ੀਨਰੀ 2015 ਦੇ ਚੇਅਰਮੈਨ ਤੇ ਪੀਯੂ ਸਪੋਰਟਸ ਕਮੇਟੀ 2013-14 ਦੇ ਪ੍ਰੈਜ਼ੀਡੈਂਟ ਦੀਆਂ ਸੇਵਾਵਾਂ ਨਿਭਾਈਆਂ ਹਨ। ਡਾ. ਸ਼ਰਮਾ ਨੂੰ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਐਜੂਕੇਸ਼ਨਲ ਟਰੱਸਟ ਡੱਲੇਵਾਲ, ਕੈਂਬਰਿਜ ਓਵਰਸੀਜ਼ ਸਕੂਲ ਮੁਕੇਰੀਆਂ ਤੇ ਕੈਂਬਰਿਜ ਇੰਟਰਨੈਸ਼ਨਲ ਸਕੂਲ ਨਵਾਂਸ਼ਹਿਰ ਦੇ ਵਿਦਿਅਕ ਮਾਹਿਰ ਤੇ ਐੱਸਡੀ ਸੀ ਸੈ ਸਕੂਲ... ਸ਼ਾਮ ਚੌਰਾਸੀ, ਐੱਸਡੀ ਪਬਲਿ... ਹਰਿਆਣਾ ਤੇ ਜੀਜੀਡੀ ਐੱਸਡੀ... ਸਕੂਲ ਹਰਿਆਣਾ ਦੇ ਬਤੌਰ ਮੈਨੇਜ... ਨਿਭਾਉਣ ਦਾ ਮਾਣ ਹਾਸਿਲ ਹੈ। ...ਖੇਤਰ ਦੇ ਤਜ਼ਰਬਿਆਂ ਨੂੰ ਹੋਰ ... ਡੂੰਘੇਰਾ ਬਣਾਉਣ ਲਈ ਡਾ. ਗੁਰਦੀ... ਵੱਲੋਂ ਅਮਰੀਕਾ, ਆਸਟ੍ਰੇਲੀਆ ... ਹਾਂਗ ਕਾਂਗ, ਪਾਕਿਸਤਾਨ ਤੇ ... ਆਦਿ ਦੇਸ਼ਾਂ ਦੇ ਦੌਰੇ ਵੀ ਕੀਤੇ ਜਾ... ਆਪਣੇ ਆਪਣੇ ਵਿਦੇਸ਼ੀ ਦੌਰਿ... ਵੀ ਵੱਖ ਵੱਖ ਦੇਸ਼ਾਂ ਦੇ ਵਿਦਿ... ਵਿਦਿਅਕ ਅਦਾਰਿਆਂ, ਯੂਨੀਵਰ... ਸਭਿਆਚਾਰਕ ਵਿਰਾਸਤੀ ਸਥਾਨਾਂ, ... ਖੂਬੀਆਂ ਤੇ ਵਿਅਕਤੀਗਤ ਜ਼ਿੰ... ਸਮਝਣ ਤੇ ਵਾਚਣ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼... ਹੁਸ਼ਿਆਰਪੁਰ ਦੇ ਨਿਰੋਲ ਪੇਂਡੂ ਤੇ ... ਦੇ ਜੀਜੀਡੀਐੱਸਡੀ ਕਾਲਜ ਹਰਿ... ਤਰੱਕੀ ਦੀਆਂ ਲੀਹਾਂ 'ਤੇ ਲੈ ਕੇ ਜਾ... ਇਲਾਕੇ ਦੇ ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਤੇ ... ਦੀ ਬਿਹਤਰੀ ਲਈ ਜੁੜੇ ਲੋਕ ... ਗੁਰਦੀਪ ਸ਼ਰਮਾ ਦੇ ਰਿਣੀ ਰਹਿਣ...

श्री कटासराज यात्रा 22 फरवरी से, 10 तक जमा कराएं पासपोर्ट

भास्कर संवाददाता | हरियाना

सभा महासचिव डा. देश बंधु शर्मा

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा की बैठक उपाध्यक्ष प्रिंसिपल गुरुदत्त शर्मा की अध्यक्षता में एलएसडीसी सेकेंडरी स्कूल बसी दौलत खां में हुई।

महासचिव डॉ. देशबंधु शर्मा और आर्गेनाइजिंग सचिव प्रिंसिपल डॉ. गुरदीप शर्मा ने बताया कि महाशिवरात्रि पर सभा नई दिल्ली की ओर से 22 फरवरी से 28 फरवरी तक की जाने वाली श्री कटासराज यात्रा की विदेश मंत्रालय ने स्वीकृति दे दी है। उन्होंने बताया कि पंजाब से तीर्थयात्रा पर जाने के इच्छुक श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब, नई दिल्ली के मुख्य कार्यालय भूपेंद्रा भवन, पहाड़ गंज, नई दिल्ली में अपना वैध पासपोर्ट 10 जनवरी तक जमा करवा दें, ताकि यात्रा संबंधी सभी औपचारिकताएं पूरी की जा सकें। इस अवसर पर प्रिंसिपल चंद्रमोहन वासुदेवा, प्रि.अनिल हांडा, प्रिं.नीलम रानी, नीलम शर्मा, अजय कुमार शर्मा सहित सभा के अन्य लोग मौजूद थे।

दैवज्ञ पं. वेणीमाधव गोस्वामी

द्वारा लिखित एवं लिप्यंतरित ग्रन्थ

1. गोस्वामी ज्योतिष टाईम्स मासिक पत्रिका
2. लाल डायरी
3. कौन मंगलीक,कौन नहीं ?
4. पार्वती मंगल व्रत
5. श्रीहनुमान जीवन दोहावली
6. उपाय मार्तण्ड
7. सरल पूजन विधि
8. संक्षिप्त तर्पण विधि
9. **Mirror of Vaastu (English)**
10. **Lal Kitab (English)**
11. जमदग्नि भविष्य पंचांग
12. लाल किताब के फरमान (1939)
13. लाल किताब के अरमान (1940)
14. लाल किताब का गुटका (1941)
15. लाल किताब का चौथा भाग (1942)
16. लाल किताब (1952)

लाल किताब के पांचों संस्करण हमारे पास उपलब्ध है

हिमाचल पब्लिकेशन्स

25/30 1st Floor, East Patel Nagar, New Delhi-110008 E-123, Lajpat Nagar Sahibabad, Ghaziabad
Phone : 2574-3177 Fax : 2575-9028 (M) 093128-32612
Website : www.lalkitab.co.in
E-mail : benimadhavgoswami@yahoo.co.in, ribhukantgoswami@gmail.com

डॉ. नन्द किशोर शर्मा, प्रधान संपादक
10, अशोक विहार, महेश नगर
अम्बाला छावनी – 133001
मो. – 9896589890

डॉ. देशबन्धु
1117, प्रभु प्रेमपुरम, जगाधरी रोड
अम्बाला छावनी – 133001
मो. – 9812053283

सदस्यता सहयोग प्रपत्र

मैं/हमारी संस्था ....

स्थायी पता ....

....

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब (पंजी.) द्वारा प्रकाशित की जा रही "सनातन संवर्धिनी" नामक अर्द्धवार्षिक पत्रिका के लिए 100/– रु. (एक सौ रुपये केवल) की सहयोग राशि प्रतिवर्ष प्रदान करने का संकल्प लेता हूँ/लेती हूँ।

मैं/हमारी संस्था यह राशि नकद/चैक/ड्राफ्ट द्वारा श्री सनातन धर्म शिक्षा समिति (पंजी.) के नाम प्रेषित कर रहा हूँ/रही है।

हस्ताक्षर ....

नाम ....

पद..............................

गौशाला हेतु दान संकल्प

मैं..

स्थायी पता ....

....

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब (पंजी.) द्वारा सप्तऋषि आश्रम हरिद्वार में संचालित गौशाला के लिए रुपये............... (शब्दों में) ....की दानराशि प्रतिवर्ष देने का संकल्प लेता हूँ/लेती हूँ।

मैं यह राशि सप्तऋषि आश्रम हरिद्वार के नाम नकद/चैक/ड्राफ्ट द्वारा प्रदान कर रहा हूँ/रही हूँ।

हस्ताक्षर

S. D. Phullarwan Girls Sr. Sec. School

New Railway Colony, Jalandhar

XII Class Board Examination Result

Session: 2016-2017

COMMERCE STREAM

SHILPA
90%

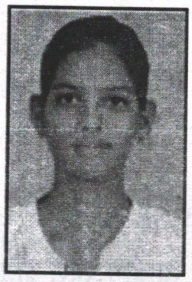

AANCHAL KUMARI
88.66%

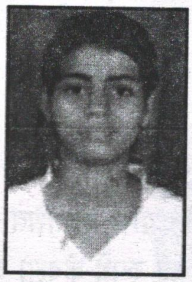

KOMAL SHARMA
83.55%

ANKITA
82.66%

SAPNA
80%

ARTS STREAM

RUPA
84%

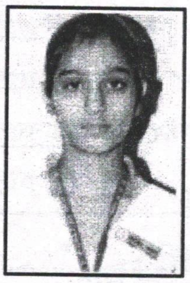

ANJALI
83.3%

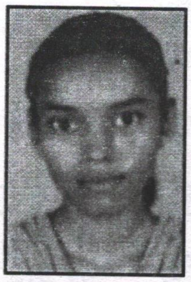

KIRAN KUMARI
82%

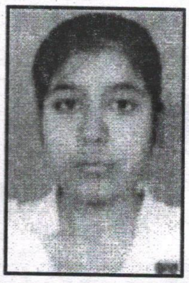

HIMANSHU SAINI
80%

MANDEEP KAUR
76.22%

SCIENCE STREAM

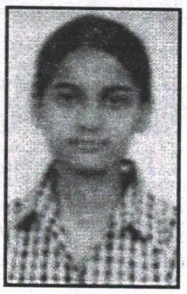

TARANPREET KAUR
77.33%

Nominations approved for the award of
Bharat Ratna Pandit Madan Mohan Malviya Memorial Award Session 2015-16

College Category

Dr. Rajeev Kumar
Associate Professor
GGDSD College Hariana
(Hoshiarpur)

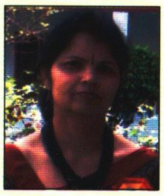

Dr. Neeru Garg
Associate Professor
SSD College for Girls
Bathinda

School Category

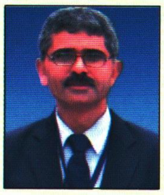

Sh. Sunil Kumar Khanna
PGT (Commerce)
The S.D.Vidya School
Ambala Cantt

Ms. Suman Sharma
PGT (Hindi)
S.D.Model Sr. Sec. School
Rajpura Town (Patiala)

Goswami Ganesh Dutt Memorial Awards

College Category

Ms. Mehak
B.Sc. Fashion Desiging Prem Chand Markanda
S.D. College for Women, Jalandhar

School Category
Central Board of Secondary Education

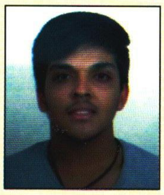

Arjun Goel, XII
Pandit Mohan Lal S.D. School
Sector 32-C, Chandigarh

Haryana School Education Board

Hitesh Arora, X
S.D. Sr. Sec. School
Hill Road, Ambala Cantt

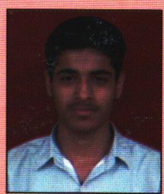

Nipun Malhotra, XII
S.D. Sr. Sec. School
Hill Road, Ambala Cantt

Punjab School Education Board

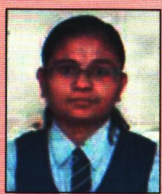

Tripta Rani, X
S.D. Model Sr. Sec. School
Rajpura Town
(Patiala)

Deeksha Thakur, XII
S.D. Phullarwan
Girls Sr. Sec. School
Jalandhar

S.D. Phullarwan Girls Sr. Sec. School, Jalandhar
Xth Class Board Examination Result Session: 2016-2017

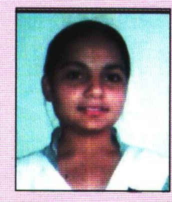

Sushmita, X
93.38%

Vishakha, X
89.69%

Gurpreet Kaur, X
87.53%

भारत रत्न महामना मदन मोहन मालवीय जयन्ती समारोह 25/12/2016 को सप्तऋषि आश्रम, हरिद्वार में आयोजित सामूहिक भजन गायन प्रतियोगिता की झलकियाँ